चन्दामामा
मां - बच्चों का मासिक पत्र
1st June '56
6

Photo by T. S. Satyan

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

'चेहरे देखो खूब बनाये!'

प्रेषिका :
श्री मुकुल मिश्रा, बस्ती

एक अमूल्य क्षण का संचय कीजिए
और उसे अपने स्मारक के रूप में रख लीजिए!

कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं, जिन्हें आप हमेशा स्मरण रखना चाहेंगे। गेवापान ३३ फ़िल्म का उपयोग कीजिए और उससे साफ़ और श्रेष्ठ चित्र, घर के अन्दर या बाहर—लीजिए, जो आज और कल को सजीव एवं स्मरणीय बना देंगे।

Gevapan 33°

उचित विवरण और गेवार्ट गेवापान ३३° एक्सपोज़र कैल्क्युलेटर के लिए लिखिए:

ALLIED PHOTOGRAPHICS PRIVATE LIMITED

एलाएड फ़ोटोग्राफ़िक्स प्राइवेट लिमिटेड

(मेहलिंग डि०) कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी ताता रोड, बम्बई-१

ए. पी. एल. का 'फोटो मेला' रेडियो सिलोन (४१ मीटर बैंड) पर प्रति बृहस्पतिवार को रात को ८-०० बजे सुनिए!

चन्दामामा

विषय-सूची

संपादकीय ... १
मुख-चित्र ... २
मित्रभेद (पद्य-कथा) ... ३
दोनों में अन्तर ... ७
भयंकर देश (धारावाहिक) ... ९
कठिनाई (जातक कथा) ... १७
एक के बाद एक ... २१
तीन सन्देह ... २८
चालाक माँ-बेटी (धारावाहिक) ३३
बताओगे ? ... ४१
अजीब चाल ... ४२
फ़ोटो परिचयोक्ति ... ४९
जादू के प्रयोग ... ५०
रंगीन चित्र-कथा - ५ ... ५२
समाचार वगैरह ... ५४
चित्र-कथा ... ५६

चुरमुरा...
ताजा...
स्वादिष्ट...
बढ़िया बिस्कुट
ब्रिटेनिया

'चरक' का गुलकंद

(प्रवालयुक्त)

गरमी का कट्टर शत्रु है!

आज ही एक बोतल
खरीदें
तथा
सचित्र सूची-पत्र
मुफ़्त मँगाए।

चरक भण्डार

५२, ह्यूज़ रोड, बम्बई-७

आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण के लिए

नौजवानों की बड़ी आवश्यकता है। अगर ऐसी माताओं की भी आवश्यकता हो, जो ऐसे नौजवानों को उत्पन्न कर सकें, तो महिलाओं के सेवन के लिये है:

लोध्रा

गर्भाशय के रोगों का नाशक।
केसरी कुटीरम् लिमिटेड
१५ वेस्टकाट रोड, रायपेट,
मद्रास-१४.

LODHRA

FOR LADIES HEALTH

केसरि कुटीरम् लि. • मद्रास.14

हम प्रत्येक व्यक्ति और व्यापारिक संस्थाओं को आश्वासन देना चाहते हैं कि कलात्मक सृजन, स्वच्छतम कार्य-निपुणता, आकर्षणीय छपाई और शीघ्र वितरण हमारा ध्येय है।
★
हिन्दी, अंग्रेजी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम और उड़िया में छपाई का कार्य लिया जायगा।
★
दी बी. एन. के. प्रेस
(प्राइवेट) लिमिटेड
चन्दामामा बिल्डिंग्स :: मद्रास-२६
फोन: ८८४७४

"अहा, कितने अच्छे हैं ये चित्र! काश, मेरे पास भी एक क़ीमती कैमरा होता!"

"किसलिए? मेरे पास तो मामूली 'ब्राउनी' कैमरा ही है, लेकिन मैं हमेशा कोडक 'प्लस-एक्स' फ़िल्म का इस्तेमाल करता हूँ जो स्पष्ट चित्र खींचने के लिए लाजवाब है।"

स्पष्ट चित्र खींचने के लिए आप भी कोडक 'प्लस-एक्स' फ़िल्म ही लीजिए। एनलार्जमेन्ट बनाने के लिए तो यह फ़िल्म ख़ासतौर से अच्छी रहती है।

आप जानते हैं कि रेल तक पर फ़िल्म ख़त्म हो जाने से बड़ी ही तकलीफ होती है, इसलिए हमेशा दो रोल ख़रीदिए — एक इस्तेमाल कीजिए और एक बचाकर रखिए।

कोडक लि० (इंग्लैण्ड में सम्बद्ध। कंपनी के सदस्यों का दायित्व सीमित है)
बम्बई-कलकत्ता-दिल्ली-मद्रास.

संचालक : चक्रपाणी

महात्मा बुद्ध की २५०० वीं जयन्ती २४ मई १९५६ से मनायी जा रही है। उस अवसर पर सारनाथ में एक विशेष विराट उत्सव सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत, चीन, लंका, इंडोनेशिया, बर्मा आदि देशों ने भाग लिया।

अनेक सन्तों और महा पुरुषों के जन्म के ही कारण प्राच्य संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ। संसार के ज्ञानी पुरुषों ने महात्मा बुद्ध को 'एशिया की ज्योति' का नाम देकर उनकी प्रशंसा की!

सौभाग्य की बात है कि भारत को बौद्ध संस्कृति विरासत में मिली है। इसके विकास में अब भी भारत संलग्न है।

जून १९५६

वर्ष : ७
अंक : १०

मुख - चित्र

कर्ण आदि, के कहने-सुनने पर, अथवा पाताल के दैत्यों की सलाह पर, दुर्योधन ने अपना वह उपवास तोड़ दिया, जो उसने गन्धर्व राजा से अपमानित होकर प्रारम्भ किया था।

दुर्योधन को उत्साहित करने के लिए कर्ण, एक बड़ी सेना इकट्ठी कर विजय-यात्रा पर निकल पड़ा। जो जो राज्य वह जीतता गया, उनको वह दुर्योधन के आधीन करता गया। दुर्योधन ने इस सन्तोष में 'वैष्णव' नामक यज्ञ करने की ठानी।

इस यज्ञ के लिए, नगर के बाहर की भूमि को सोने के हलों से ठीक करवाया गया, फिर शिल्पियों ने आकर यज्ञशाला का निर्माण किया। यज्ञ में निमन्त्रित करने के लिए, दुर्योधन ने पाण्डवों के पास एक दूत द्वैत वन में भेजा। उस दूत से युधिष्ठिर ने कहा— "हम इस समय वनवास का व्रत कर रहे हैं। उसका भंग नहीं होना चाहिये। इसलिए हम नहीं आ सकते।" भीम ने दूत से यों कहा—"हमारा अरण्य वास और अज्ञात वास समाप्त होते ही भाई जी एक यज्ञ करेंगे, उसमें दुर्योधन और उसके भाई बलि-पशु का काम देंगे। दुर्योधन से कहना कि उस यज्ञ के लिए मैं आऊँगा।" दूत वापिस चला गया।

दुर्योधन ने बड़े ज़ोर-शोर से यज्ञ सम्पन्न किया। दुर्योधन बड़ा खुश हुआ। ख़ास तौर पर यह जानकर कि पाण्डवों के विरुद्ध होनेवाले युद्ध में, उसको कर्ण का सहयोग मिलेगा और इसमें निस्सन्देह उसकी विजय होगी।

और उधर द्वैत वन में, जब युधिष्ठिर सो रहे थे, उनको एक सपना आया। सपने में उनको कई जंगली जानवर दिखाई दिये। "तुम यहाँ क्यों आये हो? क्या चाहते हो?"—युधिष्ठिर ने उनसे पूछा।

"महात्मा!....हम इस द्वैत वन में रहनेवाले पशु हैं। ज़माने से आपके भाई हमारा शिकार खेलते आये हैं और अब यह नौबत है कि हमारे वंश का ही शायद मटियामेट हो जाये। आप हमारी रक्षा कीजिये।" जानवरों ने विनती की। अगले दिन युधिष्ठिर अपने भाइयों और पत्नी के साथ काम्यक वन में चले गये।

शुभ मुहूर्त में वट के नीचे
बैठे तीनों राजकुमार,
कहा विष्णुशर्मा ने—"शिष्यो,
देखे हैं क्या तुमने स्यार?"

बोल उठे तीनों ही—"हाँ, हाँ,
कितने ही देखे हैं स्यार,
कहें गुरूजी अभी आप तो
ले आयें कुछ को झट मार।"

शान्त स्वरों में बोले गुरुवर—
"बस, बस, हो सचमुच ही वीर!
कथा सुनाता अभी एक मैं
सुनो उसे ही रहकर धीर।

सिंह एक रहता था वन में
बैल एक था उसका मीत,
साथ विचरते रहते दोनों
थी उनमें अनुपम ही प्रीत।

देख न पाया लेकिन उनकी
मैत्री को इक लोभी स्यार,
चली चाल उसने तब ऐसी
हुआ बैल का ही संहार!"

"कैसे गुरुवर?" बोल उठे झट
कौतूहलवश राजकुमार;
गुरुवर बोले—"सुनो, कथा का
अब होगा आगे विस्तार।

वणिकपुत्र था एक नगर में
वर्धमान था उसका नाम,
बहुत कमाया धन था उसने
किंतु न उसने लिया विराम।

लगा सोचने धन-संग्रह के
जितने भी हैं शेष उपाय,
सर्वोपरि है निश्चय उनमें
क्रय-विक्रय का ही व्यवसाय।

'भारती भक्त'

सरल माँगना भिक्षा लेकिन
संभव कैसे हाय गुजर,
बड़े-बड़े ही लोग यहाँ जब
द्रव्य-दान से जायँ मुकर?

राजा की सेवाओं द्वारा
हो सकता है धन का संचय,
किंतु वहाँ पर भी रहता है
राज-कोप का भारी संशय।

अध्यापन करके जीना तो
मुश्किल-सा लगता है आज;
व्यर्थ मोल झंझट है लेना
सूदखोर का करना काज!

खेती में भी कई आफतें
आती रहती हैं दिन-रात,
जल जाती है फसल बात में
हुई न यदि अच्छी बरसात।

अस्तु, यहाँ सबसे अच्छा है
करना बस केवल व्यापार,
यही सोचकर वर्धमान ने
गाड़ी की अपनी तैयार।

संजीवक औ' नन्दक नामक
दो बैलों को उसमें जोत,
चला वणिक-सुत शुभ सायत में
अपनी कुलदेवी को न्योत।
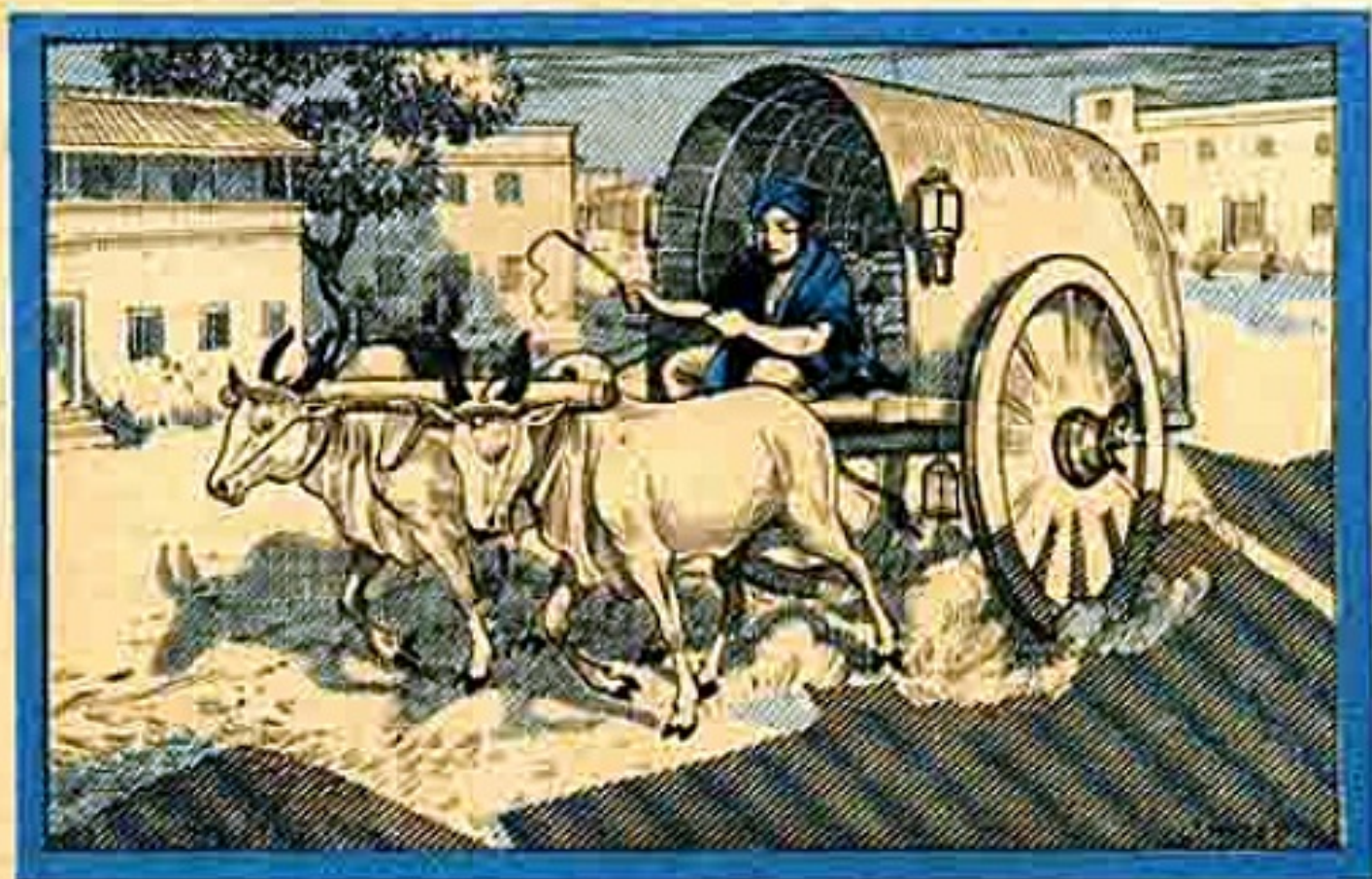
अच्छे-अच्छे माल लदे थे
जाना था यमुना के पार,
पथ में बीहड़ वन पड़ता था
जन्तु जहाँ रहते खूँखार।

सहसा किस्मत गयी एक दिन
युवा वणिक की तब तो फूट,
संजीवक का पैर कीच में
फिसल गया जब बिलकुल टूट।

दशा बैल की देख व्यथा से
हुआ वणिक का मन अभिभूत,
तीन दिवस तक रुका रहा वह
वहीं बना जैसे जड़-भूत।

फिर भी चंगा नहीं हुआ जब
सुन्दर वह संजीवक बैल,
कहा साथियों ने उसको यह
'जाने दें आखिर यह बैल।

इसकी खातिर डाल रहे क्यों
खतरे में अपने भी प्राण?
बाघ-सिंह रहते इस वन में
नहीं कहीं कोई इन्सान!'

जँची बात यह वर्धमान को
चलने की ली उसने ठान,
संजीवक की रक्षा के हित
छोड़ गया रक्षक बलवान।

किंतु रक्षकों ने भी पीछे
निज प्राणों पर संकट जान,
दिया छोड़ संजीवक को उस
वन में ही, हा, मृतक समान !

कही उन्होंने जाकर प्रभु से
झूठमूठ ही गढ़कर बात —
'संजीवक मर गया तड़पकर
कल ही लगभग आधी रात ।

प्रिय तो था वह बहुत आपका
इसीलिए हमने हे नाथ !
चिता रचाकर उसे सौंप दी
तत्क्षण अग्निदेव के हाथ ।'

भृत्यों की बातें सुनकर तब
हुआ वणिक को मन में तोष,
मान लिया सबको उसने निज
कर्मों का ही सारा दोष ।

संजीवक की आयु शेष थी
नहीं मरण-वेला थी पास,
यमुना-तट के स्निग्ध पवन ने
लौटायी जीवन की आस ।

किसी तरह वह उठता गिरता
पहुँचा हरियाली के पास,
और लगा चरने अति सुख से
कोमल कोमल मोटी घास ।

खा-पीकर कुछ ही अर्से में
हुआ स्वस्थ भारी बलवान,
लगा खोदने भूमि सींग से
और हुँकड़ने शेर समान ।

कूदा करता रौंद लताएँ
वृक्षों पर करता आघात,
लगता जैसे विचर रहा हो
शिववाहन नंदी साक्षात !"

दोनों में अन्तर

कोसल के राजा का नाम चन्द्रपीड़ था। उनके यहाँ धवलमुख नाम का एक नौकर था। धवलमुख कभी भी महल से सीधे घर न जाया करता था। कहीं खाना खा, काफ़ी देर बाद घर पहुँचता।

एक दिन धवलमुख की पत्नी ने अपने पति से पूछा—"क्यों जी! आप रोज़ कहीं न कहीं भोजन कर आते हैं! आपको रोज़ भोजन देता कौन है?"

"मेरे दो अच्छे दोस्त हैं। उनमें से एक का नाम कल्याण वर्मा है। उससे चाहे मैं कुछ भी माँग लूँ, वह मुझे दे देगा। भोजन के बारे में तो अलग कहने की ज़रूरत ही नहीं। दूसरा दोस्त वीरबाहु है। वह मेरा इतना पक्का दोस्त है कि अगर मौका आ पड़े तो मेरे लिये वह जान भी दे देगा।"—धवलमुख ने पत्नी से कहा।

यह जानकर कि उसके पति के दो इतने पक्के दोस्त हैं, उसकी पत्नी बड़ी सन्तुष्ट हुई। "कभी आप मुझे अपने दोस्त दिखाइये न!"—पत्नी ने पति से पूछा।

"इसमें क्या रखा है! कल दोनों को देख आयेंगे।"—धवलमुख ने कहा।

अगले दिन वे पहले पहल कल्याण वर्मा के घर गये। कल्याण वर्मा ने उन दोनों की खूब आवभगत की, भोजन खिलाया, आदर-सत्कार किया। धवलमुख की पत्नी को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसके पति ने कल्याण वर्मा के बारे में कहा था, रत्ती भर भी अतिशयोक्ति न थी।

तब दोनों वीरबाहु के घर गये। वीरबाहु किसी के साथ शतरंज खेलने में मस्त था। उसने धवलमुख को देखकर कहा—"अरे! तुम भी आ गये, बैठो।" वह फिर शतरंज

श्री मनोहर दास गुप्त

खेलने लगा। पति-पत्नी थोड़ी देर तो बैठे रहे, फिर उन्होंने वीरबाहु से कहा—"हम जा रहे हैं" वीरबाहु ने बिना सिर हिलाये कहा—"अच्छा, जाओ।"

पत्नी ने पति से कहा—"आप तो कह रहे थे कि वीरबाहु आपका अधिक पक्का दोस्त है; पर कल्याण वर्मा ने ही उससे कहीं अधिक आवभगत की!"

"अगर तुम उन दोनों में भेद जानना चाहती हो तो कल उनमें से किसी के पास जाकर कहना कि राजा को मुझ पर गुस्सा आ गया है। तब जो गुज़रेगा तुम ही देख लेना।"—धवलमुख ने पत्नी से कहा।

अगले दिन पत्नी ने पहिले कल्याण वर्मा के घर जाकर कहा—"मेरे पति पर राजा नाराज़ हैं। अब वे बड़ी विपत्ति में हैं। क्या आप अपने मित्र की कुछ मदद कर सकेंगे!"

कल्याण वर्मा यह सुन हैरान हो गया। "मैं व्यापारी हूँ! राजा के विरुद्ध भला मैं क्या कर सकता हूँ! तुम्हारे पति के लिये अच्छा है कि वह जल्दी ही देश छोड़कर कहीं चला जाये।"—उसने कहा।

धवलमुख की पत्नी वहाँ से वीरबाहु के घर गई और उससे भी यही बात कही। वह झट अपनी ढाल, कटार लेकर धवलमुख के पास गया—"दोस्त! बताओ! कौन है वह माई का लाल, जिसने तुम पर राजा को गुस्सा दिलवाया है। झट मैं उसका ख़ातमा कर दूँगा।"—उसने जोश में कहा।

"अरे बैठो। कोई नहीं। मन्त्री जी ने राजा को फिर खुश कर दिया है।"—धवलमुख ने कहा।

वीरबाहु के चले जाने के बाद धवलमुख ने पत्नी से पूछा—"तुमने अपनी आँखों से देख लिया न, अब दोनों में अन्तर!"
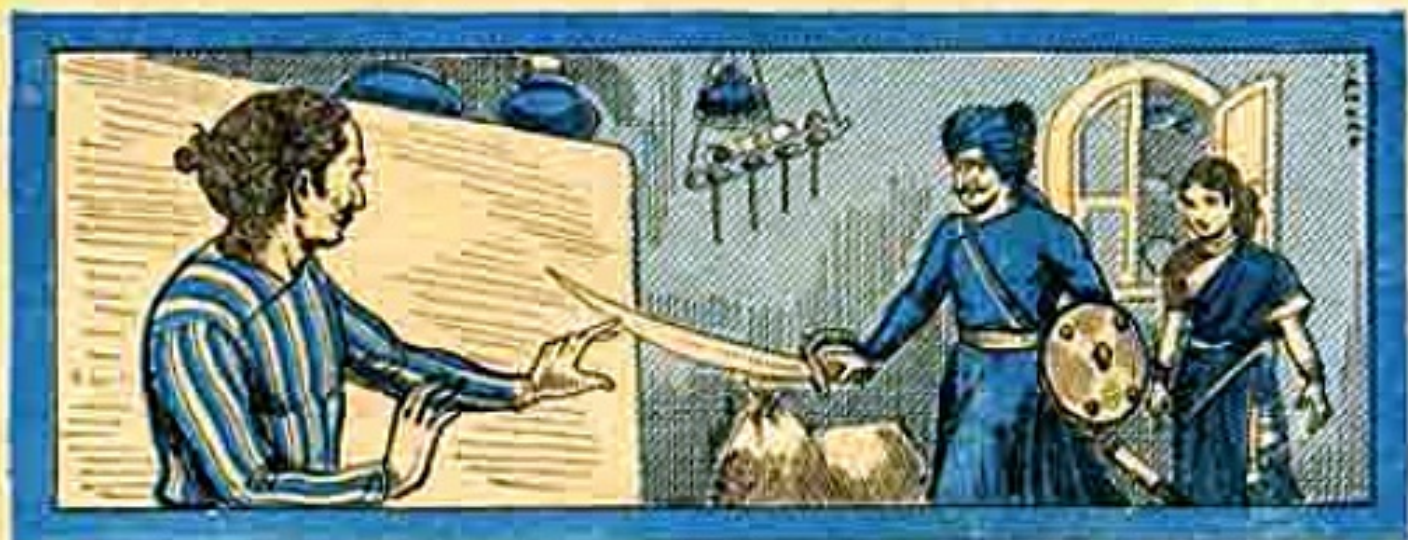
भगवान गौतम बुद्ध

भगवान गौतम बुद्ध की जीवनी

शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा थे। वे शाक्य जाति के थे। उनकी पत्नी का नाम मायादेवी था। एक दिन उन्होंने सपना देखा कि दूध के रंग का हाथी आकाश से उतरकर उनके गर्भ में समा गया है। पंडितों ने इसका अर्थ लगाया कि रानी एक ऐसे लड़के को जन्म देंगी, जो संसार को आसान से मुक्त करेगा।

नौ महीने बाद, महल के उद्यान में, शाल वृक्ष के नीचे, रानी मायादेवी ने बिना किसी कष्ट एक पुत्र को जन्म दिया। ३२ पवित्र चिन्हों के साथ भगवान बुद्ध अवतरित हुए।

उन लोगों में, जो बुद्ध को देखने आये, ऋषि असित भी थे। आशीर्वाद देने के बदले, उन्होंने, बच्चे का, साष्टांग नमस्कार कर अभिवादन किया और कहा—"ये भगवान बुद्ध हैं, जो मानवता की रक्षा करेंगे"

अपने जीवन के सातवें दिन, बुद्ध मातृ विहीन हो गये। उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया। आठ वर्ष की उम्र में उन्हें विश्वामित्र के पास शिक्षा के लिये भेजा गया। पर जो कुछ सीखा जा सकता था, बुद्ध पहिले ही जानते थे। यद्यपि उनको व्यक्तिगत रूपसे दुःख और दर्द का परिचय न था, फिर भी मूक जन्तुओं के प्रति वे बहुत दयालु थे।

एक दिन महल के उद्यान के ऊपर राज हँस का झुंड उड़ता आया। सिद्धार्थ के एक चचेरे भाई ने उनमें से एक को बाण मारकर नीचे गिरा दिया। सिद्धार्थ ने पक्षी को उठा लिया। उसका बाण निकालकर उसकी सेवा-शुश्रूषा की। उनके भाई देवदत्त ने तब हँस माँगा। सिद्धार्थ ने देने से इनकार कर दिया उन्होंने कहा—"जीवित चीज़ उनकी है, जो उनके जीवन की रक्षा करते हैं, न कि जो मारते हैं।" जब हँस ठीक हो गया तो उन्होंने उसे उड़ा दिया।

राजकुमार सिद्धार्थ की उम्र अठारह हुई। क्योंकि ज्योतिषियों ने भविष्य वाणी की थी कि या तो वे बड़े प्रतापी राजा होंगे, नहीं तो संसार को छोड़कर सन्यास ले लेंगे, इसलिए उनके पिता ने

उनके लिये हर विनोद-विलास की सामग्री उपस्थित की।

राजा शुद्धोदन ने एक समारोह की आयोजना की, जिसमें सिद्धार्थ को, कपिलवस्तु की सुन्दर स्त्रियों को भेंट देने के लिए कहा गया। सुन्दर स्त्रियाँ एक एक करके, सिद्धार्थ के सामने से, भेंट लेने के लिए गुज़रीं। अन्त में यशोधरा आई, जो सबसे अधिक सुन्दर थी, पर तब तक भेंट की सब चीज़ें खतम हो चुकी थीं। राजकुमार सिद्धार्थ ने अपने मोतियों के हार को, उसकी पतली कमर में बाँध दिया। पहिली नज़र में ही वे यशोधरा से प्रेम करने लगे। यशोधरा सुप्रबुद्ध की पुत्री थी।

यशोधरा से विवाह करने के लिए कई उत्सुक थे। सिद्धार्थ को उनके मुकाबले में अपनी श्रेष्ठता दिखानी थी। देवदत्त बहुत अच्छा तीरन्दाज़ था। अर्जुन घुड़सवारी में बहुत तेज़ था। नन्दा तलवार चलाने में बहुत प्रवीण था। परन्तु सिद्धार्थ ने, जो इनमें से कुछ भी नहीं जानते थे, इन तीनों को हरा दिया, और यशोधरा से विवाह कर लिया।

सिद्धार्थ का गार्हस्थ्य जीवन, बड़ा विलास मय, और सुखी था। उनको यह भी न मालूम था कि और लोग कैसे अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। उनको एक दिन नगर देखने की इच्छा हुई। राजा ने शहर में ऐसी व्यवस्था की कि कहीं कष्ट और परिताप के दृश्य उनकी नज़रों में न पड़े। परन्तु तो भी, राजकुमार ने एक अस्सी वर्ष के बूढ़े को, जो बेदान्त था, जिसके अंग काँप रहे थे, भीख माँगता देखा। उन्होंने अपने सारथी छन्न से मालूम किया कि सभी को बूढ़ा होना था, अगर उससे पहिले मौत न आ जाये।

फिर एक बार उन्होंने ऐसे लोगों को भी देखा, जो अछूत, बीमार और गरीब थे। उन्होंने जीवन संघर्ष को उसकी चरम नग्नता में देखा। उन्होंने श्मशान की ओर एक मुर्दे को ले जाते हुए भी देखा। ये दृश्य देखकर उनका हृदय विकल हो उठा। जीवन भय मात्र और सुख उनको परिहास-सा लगा। वे कुछ समझ न सके।

जीवन के ये गूढ़ रहस्य समझने के लिए सिद्धार्थ एक दिन रात को घर से निकल पड़े। यशोधरा अपने बेटे राहुल के साथ गहरी नींद सो रही थीं। उन्होंने उनके चरण छुये, शय्या के चारों ओर तीन बार घूमे, और कमरे से निकल गये। छन्न को

बुलाकर घोड़ा तैयार करने के लिए कहा। कोई भी जगा न था। नगर के तीनों फाटक, अपने आप निश्शब्द खुल गये।

वे सूर्योदय तक 'कण्टक' घोड़े पर सवार हो चलते गये। तब उन्होंने अपने आभूषण, पोशाक, व तल्वार निकाल दिये। अपने केश भी काट दिये। सब कुछ छन्न को देकर उसको वापिस कर दिया।

राजगृह के समीप बुद्ध व्रत-तपस्या आदि करने लगे। उन्होंने ज्ञानियों व योगियों से, जीवन के रहस्य के बारे में चर्चा की; पर वे सत्य न जान सके। उन्होंने एक दिन देखा कि एक बकरी और भेड़ों का झुण्ड बलि के लिए ले जाया जा रहा था। उनमें से एक मेमना ठीक तरह चल नहीं पा रहा था, और उसकी माँ लाचार बार बार पीछे देख रही थी। बुद्ध उसको अपने कन्धे पर रख बलिस्थल को ले गये। उन्होंने राजगृह के राजा बिन्दुसार से बलि बन्द करने के लिए कहा—"सब कोई प्राण ले सकता है, पर कोई दे नहीं सकता। दया संसार को निर्बल के प्रति मृदु बनाती है, और बलवान के प्रति उदार।" यह कहते ही लोगों के हृदय में दया उत्पन्न हुई, और बलि छोड़ दी गई।

सात वर्ष तक बुद्ध निरन्तर ऐसे सत्य का अन्वेषण करते गये, जिससे मानव-मात्र का कल्याण हो। आखिर इस सत्य का साक्षात्कार उन्हें गया के समीप "बोधि" वृक्ष के नीचे हुआ। उन्हें, दुःख, इच्छा और कर्म का रहस्य पता लगा। शान्ति और "निर्वाण" के लिए उन्होंने मार्ग प्रशस्त किया।

सात वर्ष बाद बुद्ध पुनः कपिलवस्तु वापिस गये, पर राजकुमार के रूप में नहीं, गेरुआ धारण किये सन्यासी के रूप में हाथ में भिक्षा पात्र लेकर। यशोधरा उनके पुत्र राहुल के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

पर बुद्ध मामूली भिक्षुक नहीं थे। वे राजाओं के राजा थे। लोग हज़ारों में उनका उपदेश सुनने आते। राजा, यशोधरा, राहुल, सभी ने उनका उपदेश सुना और वे भी उनके मार्ग पर चलने लगे।

बुद्ध का दिव्य संदेश, एक देश से दूसरे देश को फैलता गया। प्राणी मात्र पर दया करने का स्वभाव प्रचलित हुआ और उच्च आदर्शों को पालन करने की प्रेरणा मिली।

[११]

[जब जंगली सरदारों को यह मालूम हुआ कि नरवाहन ने उनके प्रदेश को किसी और को दे दिया है तो वे बड़े नाराज़ हुए। भेड़ियागाँव में, उन्होंने एक भारी सभा बुलाई और निश्चय किया कि वे नरवाहन का विरोध करेंगे। फिर उन्होंने नरवाहन के पास एक दूत भेजा। बाद में...]

भेड़िया गाँव में जंगलियों की बैठक के बाद जो कुछ हुआ, शिवदत्त कहता जा रहा था और मन्दरदेव सुनता जा रहा था।

"जिस बात का डर था वह ही हुआ। जिन दो युवकों ने दूत को गधे पर चढ़े आते देखा था वे उसकी ओर भागे और थोड़ी देर बाद उसको गाँव में ले आये। उस बिचारे ने क्या क्या मुसीबतें झेली थीं, इसका आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता था।"—शिवदत्त ने कहा।

दूत ने अपने सारे कष्ट सुनाये। सैनिक उसको नरवाहन के पास ले गये थे। जंगली सरदार का सन्देश पढ़ नरवाहन आग बबूला हो गया। उसने दूत को पचास कोड़े लगवाये, सिर घुटाकर, मुँह पर कालिख पोत कर, उसको गधे पर चढ़ा शहर में फिरवाया। फिर उसने कहा—"यह ही तुम्हारे सरदार के लिए मेरा जवाब है।" उसकी पीठ पर बकरी की खाल पर एक चित्र बनवा कर टुकवा दिया गया। चित्र

में एक जंगली को नरवाहन के सैनिक जंज़ीर बाँधकर ले जा रहे थे।

जंगली वृद्ध सरदार ने उस चित्र का मतलब समझ लिया। उसने मेरी तरफ़ मुड़कर कहा—"इसका मतलब यह हुआ कि या तो हमें मरना पड़ेगा नहीं तो गुलाम बनकर रहना होगा। अगर इन दोनों में से मुझे एक को चुनना पड़ा तो मैं मरना ही पसन्द करूँगा।"

भले ही परिस्थितियाँ मेरे अनुकूल न बन रही हों पर वे नरवाहन के प्रतिकूल होती जा रही थीं, इतना मैं साफ़ साफ़ समझ पाया। नरवाहन इस ख्याल में आराम से बैठा था कि कुण्डलिनी द्वीप में उसका मुक़ाबला करनेवाला ही कोई न था।

वृद्ध जंगली सरदार ने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा—"देख लिया न तुमने नरवाहन की धौंस और धाँधली। उसकी नज़र में हम आदमी ही नहीं हैं। हम कोई हिजड़े नहीं हैं कि उसके नीचे गुलाम की तरह जियें।"

"इसका मतलब यह हुआ कि आप लोग युद्ध के लिए तैयार हैं!"—मैंने पूछा।

एक क्षण बूढ़ा सरदार नीचे मुँह किये चुप रहा। फिर कुछ सोचता हुआ कहने लगा—"और कोई दूसरा रास्ता मुझे दिखाई नहीं देता। जैसे आपने पहले कहा भी था, उसके सुसज्जित सैनिकों का मुकाबला करना मुश्किल है। ख़तरनाक भी है। इसलिये भला शायद इसी में है कि हम उसकी सेना पर छुपे-छुपे हमला करें।"

"पर उस तरह हमला करने से विजय न होगी। किसी न किसी दिन आपको कुण्डलिनी नगर और राजमहल को अपने कब्ज़े में करना ही पड़ेगा।"—मैंने कहा।

बूढ़े को यह बात समझ में आ गई। उसने सिर हिलाया। इतने में दो तीन जंगली नवयुवक, जहाँ हम खड़े थे, वहाँ चिल्लाते हुए आये। वृद्ध को नमस्कार करके उन्होंने कहा—"मालूम होता है कि शत्रु बड़ी सेना के साथ हम पर आक्रमण करने आ रहे हैं। घुड़सवार और पदातियों के अलावा, हाथियों पर भी वे चले आ रहे हैं। बताइये अब क्या किया जाय?"

बूढ़े ने निश्चिन्त होकर कहा—"हम उतनी बड़ी सेना का मुक़ाबला करने नहीं जा रहे हैं। परन्तु जब मौका मिले उन पर हमला कर उनको तंग कर दो।

"क्या हम हिंस्र जन्तुओं का उपयोग कर सकते हैं?'—एक नवयुवक ने पूछा।

"हाँ! हाँ!! ज़रूर...."—वृद्ध सरदार ने कहा। विष-बाण, विष-सर्प—जो कुछ मिले उनसे शत्रुओं को दिक कर दो।"

यह आज्ञा सुन वे नवयुवक चले गये। मैं यह न जान सका कि शत्रु को शेर, और साँपों से कैसे तंग किया जा सकता था। विष-बाणों के बारे में मैं जानता था। जंगलों में रहनेवाले आदिम जाति के लोग अक्सर इनका उपयोग करते थे।

"शिवदत्त! मैं आपको एक गुप्त स्थान पर ले जाऊँगा। आपके सैनिक भी आपके साथ बेफ़िक्र आ सकते हैं।"—सरदार ने कहा।

वह गुप्त स्थान कहाँ था, और वहाँ जाने की इस समय क्या ज़रूरत थी, यह सब मैं न जान सका। वृद्ध ने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा—"आप लोगों के लिये जैसे क़िले-खाई वगैरह होती हैं, वैसे हमने भी शत्रु से बचने के लिये अपने ढंग से कहीं कहीं प्रबन्ध कर रखे हैं। मैं जिस जगह पर ले जा रहा हूँ, उसके बारे में हम लोगों में भी कम को ही मालूम है।

वह कई सालों पुराना, पहाड़ पर बना एक किले का खण्डहर है! नरवाहन के विरुद्ध युद्ध हम वहीं से चलायेंगे।"

जब वृद्ध ने सब कुछ बता दिया तो उसके बाद मैंने उससे कुछ पूछना न चाहा। मैं अपने सिपाहियों को लेकर निकल पड़ा। जंगली सरदार के साथ कुछ नवयुवक थे। सब मिलकर घने जंगल की ओर चल पड़े। हम जिस रास्ते से जा रहे थे, उस रास्ते पर कई जंगलियों के गाँव थे। हर गाँव में युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं, सब जगह खलबली मची हुई थी।

किसी किसी गाँव में, कुछ जंगली नवयुवक पाँच-छः शेरों को गले में रस्सी बाँधकर झोंपड़ियों में से बाहर ला रहे थे। शेरों को शायद बहुत दिनों से पकड़ कर रखा गया था। वे पालतू कुत्तों की तरह उनके पीछे चलते जाते थे।

"शिवदत्त! हम इन्हीं शेरों को नरवाहन के सैनिकों के विरुद्ध छोड़ने जा रहे हैं। ये शेर सौ सौ वीर सैनिकों के बराबर हैं—यह आपको जल्दी ही मालूम हो जायेगा। नरवाहन के हाथियों को तहस-नहस करने के लिये, हमारे पास

शेर है, और उसके सिपाहियों का मुकाबला करने के लिये हमारे पास हथियार भी है।"—उस वृद्ध सरदार ने कहा।

तब मैं जंगलियों की बहादुरी और वीरता की प्रशंसा किये बगैर न रह सका। वृद्ध सरदार को इस विषय में इतना विश्वास था कि मुझे आश्चर्य होता था। मैं जानता था कि पालतू जानवरों और विष-बाणों से एक सुसज्जित, सशक्त सेना को जीतना आसान काम न था।

वृद्ध कुछ सोचता सोचता आगे बढ़ता जाता था। छोटे-मोटे टीलों, गढ़ों, झाड़ी-झंखाड़ों को पार करते हुए हम घने जंगल में आगे चलते जाते थे। एक जगह दस-ग्यारह जंगली छोटी छोटी टोकरियों से, किसी चीज़ को बड़े बड़े टोकरे में रख रहे थे। वे जिस होशियारी से यह काम कर रहे थे, वह देखकर मैं चकित था।

"उस बड़े टोकरे में ये क्या रख रहे हैं?"—मैंने वृद्ध सरदार से पूछा।

"साँप! ज़हरीले साँप!!" उसने कहा—"आप जल्दी ही देख लेंगे कि इनका भी उपयोग कैसे होता है!"

चलते चलते हम एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँचे। बड़े पहाड़ की सूचना-सी देते हुए बड़े बड़े वृक्ष सामने दिखाई देने लगे। वृद्ध सरदार ने वहां रुककर मुझसे यों कहा:

"इस द्वीप में बहुत-से लोग यह नहीं जानते कि हमारे सामने एक ऊँचा पहाड़ है और उस पहाड़ पर एक क़िले का खण्डहर है। क्योंकि वह खण्डहर, पेड़-पत्तों से खूब ढँका हुआ है, इसलिये हमारी आँखों को आसानी से नहीं दिखाई देता। हम जैसे लोगों को ही, जो यहाँ घूमते-फिरते हैं, इसके बारे में कुछ मालूम है।"

मैं सिर हिलाकर खड़ा रहा। मुझे ऐसा लगा कि अगर इस घने जंगल में कोई मज़बूत क़िला हो तो वहां से नरवाहन का मुक़ाबला करना बहुत आसान था। दो-तीन बहादुर अगर मिल जायें तो नरवाहन को खूब तंग किया जा सकता था।

"क्या क़िला एकदम टूट-फूट गया है?"—मैंने वृद्ध से पूछा।

"यह तो नहीं कह सकता कि बहुत टूट-फूट गया है। पर इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि वह अब खण्डहर-सा है। अगर हम एक बार उसमें जा बैठें तो शत्रु पैदल तो आ सकता है; पर घोड़ों और हाथियों पर सवार होकर नहीं आ सकता। अगर कहीं शत्रुओं का झुण्ड नज़दीक भी आ गया तो उन पर पत्थर लुढ़का कर, उनको मारा जा सकता है। पेड़ों पर चढ़, उन पर विष-बाण छोड़ उनका खातमा किया जा सकता है।"—वृद्ध ने कहा।

वृद्ध की बातें सुनकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। भले ही अन्तिम विजय नरवाहन की हो, पर इस बीच में उसको खूब तंग किया जा सकता था; उसकी सेना को नष्ट किया जा सकता था। और अगर यही

मौका देख शहरवालों ने भी उसके अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर दिया तो उसका पतन अवश्यम्भावी है।

हम धीमे धीमे पहाड़ पर चढ़ने लगे। वह जगह सुनसान थी। लोग आते-जाते न थे। इसलिये वहाँ चलने के लिए ठीक रास्ता भी न था। हमारे आगे जानेवाले जंगली नवयुवक, तलवार, कटारों से पेड़ काटकर हमारे लिये रास्ता बनाते जाते थे। वहाँ हिंस्र जन्तु भी इधर उधर घूम-फिर रहे थे। चीते, हमें देखकर अपने अपने रास्ते पर चलते जाते थे। पेड़ों पर से मुझे अजगर भी लटकते दिखाई दिये।

ठीक दुपहर को, हम चलते चलते पहाड़ की चोटी पर, किले के खण्डहर के पास पहुँचे। मुझे वहाँ पहुँचकर ही मालूम हुआ कि वह बहुत ऊँचा पहाड़ था। खण्डहरों की दीवारों से, सम्पूर्ण कुण्डलिनी द्वीप और उसको घेरा हुआ समुद्र साफ़ साफ़ दीख पड़ता था।

क्या यहाँ से नरवाहन का मुकाबला किया जा सकता है! सोचते हुए मैं किला देखने लगा।

वहाँ बिखरे पड़े हुए बड़े बड़े स्तम्भ, पत्थर यह बता रहे थे कि एक समय यह किला बहुत ही मज़बूत रहा होगा। किले के मुख्य द्वार के दरवाजे बुरी हालत में थे और गिरने को तैयार थे।

"शिवदत्त! अगर आप किले को देखना चाहें तो मैं आपके साथ एक अपना आदमी भेज सकता हूँ।"—वृद्ध सरदार ने कहा। इतने में हमें भयंकर शोर और हाथियों का चीत्कार सुनाई देने लगा। "यह क्या है!" पूछता हुआ, आश्चर्य से जंगली युवकों की ओर वह देखने लगा।

(अभी और है)

कठिनाई

ब्रह्मदत्त जब काशी का राजा था, तब बोधिसत्व, एक ब्राह्मण घराने में पैदा हुए। उनका नाम सोमदत्त था। उनका पिता बहुत ही गरीब था। थोड़ी बहुत ज़मीन थी। उसी में खेती-बारी कर लेते थे। पर मुश्किल से गुज़ारा होता था।

सोमदत्त जब बड़ा हुआ, तो अपने पिता को कुटुम्ब-पोषण के लिये कष्ट उठाते देख उसे बड़ा दुःख हुआ। माँ-बाप की सहायता करने के लिये उसे एक ही एक रास्ता दिखाई दिया। वह यह था कि कहीं विद्या सीख कर किसी की नौकरी की जाय। एक दिन सोमदत्त ने अपने पिता से कहा—"मैं तक्षशिला जाकर कोई विद्या सीखना चाहता हूँ।" पिता भी इसके लिये मान गये।

तक्षशिला जाकर एक गुरु की सेवा-शुश्रूषा कर, विद्या सीखकर सोमदत्त अपने गाँव आ गया। उसका पिता हमेशा की तरह एक जोड़ी बैल से उसी आधे बीघे ज़मीन में खेती कर रहा था। उनको अब भी पहिले जैसी तंगी थी। सोमदत्त अगले दिन ही काशी गया और वहाँ के राजा की नौकरी में लग गया।

थोड़े दिनों बाद पिता का एक बैल अचानक मर गया। कितनों ही बर्षों से वह बैल उनकी सेवा कर रहा था और वे बैलों की सेवा कर रहे थे। बैल के मर जाने पर सोमदत्त के पिता को ऐसा लगा, जैसे उनके एक हाथ को लकवा मार गया हो। यह सोच कि उसका लड़का राजा की नौकरी कर रहा है, क्या वह राजा से एक बैल भी न माँग सकेगा? सोमदत्त के पिता काशी गये।

सब सुनने के बाद सोमदत्त ने पिता से कहा—"अब आप दोनों की उम्र काफ़ी

हो गई है। क्यों उस थोड़ी-सी ज़मीन के लिये खून पसीना एक करते हैं! आप भी मेरे पास आकर रहिये।"

पिता को पुत्र की बात न जँची। उसने कहा—"मैं मरूँगा तो उसी गाँव में मरूँगा। मैं उसे छोड़कर नहीं आ सकता। अगर तुमने मुझे एक और बैल दिलवा दिया, तो खेती करता आराम से रहूँगा। जो आराम उसमें है, वह यहाँ कहाँ मिलेगा?"

सोमदत्त को नौकरी में लगे थोड़े दिन ही हुए थे। उनके पास इतना धन न था कि बैल खरीद पाते। राजा से माँगना अच्छा न था। राजा को शायद बुरा लगे कि आये अभी दस दिन भी न हुए कि हाथ पसार रहा है। इसलिये उसने पिता से कहा—"अगर मैं राजा से बैल माँगता हूँ तो वे पूछेंगे—"तुम्हें बैल से क्या काम! किसके लिये माँग रहे हो।" फिर एक मुझ जैसे नौकर के लिये इस तरह माँगना भी अच्छा नहीं है। आपके लिये ऐसी कोई दिक्कत नहीं है। आप सीधे जाकर माँग सकते हैं। सारी कहानी सुना कर कहना कि कृपया एक बैल दिलवा दें। राजा ज़रूर देंगे। इसमें कोई खराबी भी नहीं है।"

पर पिता को यह सुझाव पसन्द न आया। उसने कहा—"बेटा! मैं गाँव का रहनेवाला हूँ। उम्र भी हो गई है। सिवाय हल चलाने के मैं कुछ जानता भी नहीं हूँ। कहाँ राजा, कहाँ उनका दरबार और कहाँ मैं! दरबार में घुसते ही हो सकता है कि मेरे मुख से बात भी न निकले। मैं क्या जानूँ कि राजा से कैसे बातचीत की जाती है! जैसे तैसे तुम ही मेरा काम कर दो।"

"इन सब दिक्कतों का मैं एक इलाज बताता हूँ। मैं एक श्लोक लिखकर देता हूँ। उसे घोट-घाटकर दो-तीन दिन बाद राजा के पास जाइये। उनको नमस्कार कर श्लोक सुनाइये। आपका काम बन जायगा।" सोमदत्त ने अपने पिता को समझाया। बाद में उसने यह श्लोक लिखकर पिता से कण्ठस्थ करवाया :

"द्वे मे गोणा महाराज,
ये हि खेत्तं कसामसे।
तेसु एको मतो देव,
दुतियं देहि खत्तिय।"

इसका मतलब यों है: "महाराज! मेरे पास एक जोड़ी बैल था। उनके

सहारे खेती कर लिया करता था। अब उनमें से एक मर गया है। मुझे दूसरा दिलवाइये।"

बूढ़े ने बहुत मेहनत से इस श्लोक को कण्ठस्थ किया। फिर सोमदत्त पिता को अपने साथ दरबार में ले गया। पुत्र की सलाह के अनुसार वह राजा, मन्त्री, सामन्तों को नमस्कार कर खड़ा हो गया।

"आप कौन हैं? क्या चाहिए?" राजा ने पूछा। तुरत बूढ़े ने रटा-रटाया श्लोक पढ़ दिया। परन्तु घबराहट में श्लोक बदल गया था। वह यूँ हो गया था:

"द्वे मे गोणा महराज !
ये हि खेतं कसामसे ;
तेसु एको मतो देव,
दुतियं गण्ह खत्तिय।"

सब दरबारी हँसे। सोमदत्त ने सिर झुका लिया। क्योंकि उसके पिता ने यह कहने के बदले कि—"मुझे दूसरा बैल दिलवाइये"—यह कह दिया था कि—"मेरा दूसरा बैल ले लीजिये।"

"क्या तुम मुझे अपना बैल देने के लिये ही इतनी दूर आये हो?"—राजा ने हँसते हुए पूछा।

"महाराज! अगर आप चाहते हैं तो उसे ले लीजिये, उसी के कारण यह नौबत आई है।" कहते हुए सोमदत्त के पिता ने अपनी सारी कहानी राजा को सुना दी।

सोमदत्त के व्यवहार को देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसकी नौकरी में सब ऐसे थे, जो बात बात पर उसकी सहायता चाहते थे। सोमदत्त ने कभी कुछ न माँगा था। राजा ने आठ जोड़ी बैल खूब सजा-धजाकर सोमदत्त के पिता को भेंट में दे दिये। वह बहुत ही खुश हो गया।

एक के बाद एक

कन्नौज के राजा तालध्वज के तीन लड़के थे। उनका नाम पुष्पकेतु, चित्रभानु और पिंगल था। पिता को बिना बताये वे दक्षिण देश देखने घर से निकल पड़े। थोड़े दिनों बाद वे स्त्री राज्य में पहुँचे। उस राज्य की रानी का नाम मुकुटरत्ना था।

उन्होंने एक मकान किराये पर लिया। वे तीनों शहर देखने अलग अलग रास्तों से गये। पिंगल को एक गली में एक विशाल मकान दिखाई दिया। उस घर के सामने एक सुन्दर स्त्री का चित्र लटक रहा था। उसमें यों लिखा था: "यह चित्र अच्छे घराने की राजमणि नामक कन्या का है। अगर कोई विद्वान नवयुवक, उसके संकेतों का अर्थ समझ सके तो उससे विवाह कर सकता है। और अगर कोई न बता सका तो उसको माली का काम करना होगा। जो यह शर्त मानने को तैयार हों, वे ही घंटा बजायें।"

राजमणि का चित्र देखते ही पिंगल को उससे विवाह करने की इच्छा हुई। उसने जाकर घंटा बजाया। तुरत दो दासियाँ आईं और उसको एक कमरे में बिठाकर चली गईं। थोड़ी देर बाद, उन्होंने एक तश्तरी में नये नये मुलायम पत्ते लाकर दिखाये और पूछा—"इसका अर्थ बताइये, हम अपनी मालकिन से जाकर कह देंगी" पिंगल ने बहुत देर माथापच्ची की, पर वह उस संकेत का मतलब न जान सका।

पिंगल को आखिर हार माननी पड़ी। तुरत सिपाही आये, और उसके आभूषण आदि उतारकर, उसको बाग़ में काम कराने के लिए ले गये।

श्री बल्लभदास परमार

परन्तु पुष्पकेतु ने घंटी नहीं बजाई। वहाँ के सब से बड़े पंडित के पास वह गया। उसने पंडित से कहा—"सुना है कि आपके पास कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं जो और जगह नहीं मिलते हैं। क्या मैं वे ग्रन्थ एक बार देख सकता हूँ?" पंडित ने अपने ग्रन्थ पुष्पकेतु को दिखा दिये। उनमें एक ही ऐसा ग्रन्थ था, जिसको पुष्पकेतु ने नहीं पढ़ा था। उस पुस्तक का नाम "नागर सर्वस्व" जिसको 'पद्म श्री' नाम के एक बौद्ध सन्यासी ने लिखा था। उसमें उसने संकेतों पर लिखा अध्याय, चार पांच बार पढ़ा। पंडित से आज्ञा लेकर, वह राजमणि के घर गया और वहाँ उसने घंटी बजाई।

दासियाँ उसको सादर एक कमरे में बिठाकर चली गईं। एक तश्तरी में नये नये पत्ते लाकर उन्होंने पुष्पकेतु के सामने रखे। उन्हें देखते ही पुष्पकेतु को याद आया "कुलरक्षांकुर स्मृतः" वह जान गया कि राजमणि उसके कुल के बारे में पूछ रही थी। उसने जवाब भिजवाया कि "मैं क्षत्रिय हूँ।" इसके बाद संकेत के रूप में कई और सन्देश भी भेजे गये। सब का पुष्पकेतु ने सही उत्तर दिये

जब पुष्पकेतु घर पहुँचा तो दोनों भाई वापिस न आये थे। अगले दिन सवेरे वह उनको ढूँढ़ने निकला। वह भी उस मकान के पास पहुँचा, जहाँ राजमणि का चित्र टंगा था। जब उसने वहाँ खड़े सिपाहियों से पूछताछ की तो उन्होंने बताया कि कल ठीक उसकी शक्ल वाला वहाँ एक आया था और वह अब बाग़ में काम कर रहा है। पुष्पकेतु को विश्वास हो गया कि वह व्यक्ति उसका भाई ही होगा। उसे अब जैसे तैसे राजमणि को हराकर भाई को छुड़ाना था। अब दूसरा उपाय नहीं है।

आख़िर दासियों ने आकर कहा—"हमारी मालकिन आपको देखना चाहती हैं।"

पुष्पकेतु को एक विचित्र कमरे में प्रविष्ट कराया गया। सोने के सिंहासन पर एक स्त्री बैठी हुई थी। उसने उसका स्वागत किया। "मैं विवाह करने के लिये तैयार हूँ।"—उस स्त्री ने कहा। पर, पुष्पकेतु को सन्देह हो रहा था कि वह राजमणि है कि नहीं।

"क्या आपने प्रश्न भेजे थे! आप तो राजमणि नहीं हैं!"—उसने पूछा।

"मैं राजमणि तो नहीं हूँ, पर प्रश्न मैंने ही भेजे थे। मैं इस देश की रानी हूँ। मेरा नाम मुकुटरत्ना है। राजमणि मेरी एक सहेली है। कहीं ऐसा न हो कि प्रजा को ख़बर हो जाय कि मैं पति की खोज में हूँ, मैं सहेली के नाम पर यह काम कर रही थी।"—उस ने कहा।

"इसमें मेरी तो कोई हानि नहीं है; पर कल मेरा भाई आपसे हारकर आपके बाग़ में काम कर रहा है। उसे तुरंत छुड़वा दीजिये।" पुष्पकेतु ने कहा।

मुकुटरत्ना ने हँसकर कहा—"वह आपका भाई है! राजमणि ने उससे विवाह करने की ठान ली है। हम दोनों का एक साथ ही विवाह होगा।"

और इधर, चित्रभानु को भी एक अजीब अनुभव हुआ।

उस नगर में मणिमन्त नाम का कोई करोड़पति व्यापारी रहता था। उसकी इकलौती लड़की का नाम उर्मिला था। वह बड़े लाड़-प्यार से पाली गई थी। पिता करोड़पति था और लड़की थी, तिलोत्तमा-सी सुन्दरी। उसके लिये उपयुक्त वर ढूँढ़ने के लिये मणिमन्त ने लाखों रुपये खर्च किये। आख़िर, शुक्द्वीप में रहनेवाले
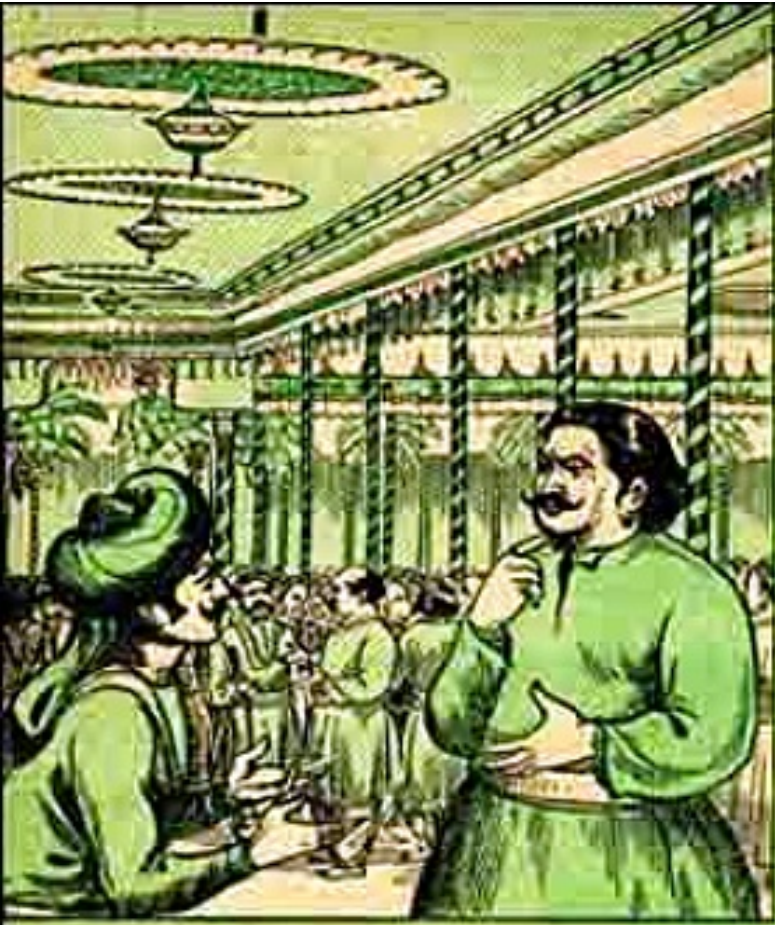
रत्नराद के लड़के के साथ उसका विवाह निश्चित किया गया। क्योंकि बरातियों को बहुत दूर से समुद्र पार करके आना था, इसलिये यह तय हुआ कि छे महीने बाद विवाह हो। निमन्त्रण पत्र भेजे गये। वर पक्ष वालों को यह भी ख़बर भिजवाई गई कि यदि विवाह तब न हुआ तो अगले तीन वर्ष तक न हो सकेगा।

विवाह की धूमधाम से तैयारियाँ हुईं। मणिमन्त ने उर्मिला के विवाह पर एक करोड़ रुपये ख़र्च करने की सोच रखी थी।

विवाह का दिन आया। निमन्त्रित अतिथि हज़ारों की संख्या में पंडाल में उपस्थित हुए। परन्तु बरातियों का कहीं पता न था। अभी मुहूर्त में दो-तीन घंटे थे कि मणिमन्त के नौकरों ने आकर बताया कि ख़बर मिली है कि बरातियों के जहाज, समुद्र में चट्टानों से टकराकर चकनाचूर हो गये हैं।

मणिमन्त को काटो तो खून नहीं। हज़ारों आदमियों को बुलाया था। इतना रुपया ख़र्च किया था, अब शादी कैसे रोकी जाय! वह निमन्त्रित सज्जनों में जाकर इधर उधर देखने लगा। उसकी नज़र चित्रभानु पर पड़ी। उसने उसको अलग ले जाकर सब बता दिया—"बेटा! मेरी लड़की से शादी करके मेरी इज़्ज़त बचाओ। मेरे पास दस करोड़ रुपये हैं। एक ही एक लड़की है, और सौन्दर्य में किसी से कम नहीं है।" चित्रभानु ने भी बताया कि वह एक राजा का लड़का था। वह उर्मिला से विवाह करने के लिये मान गया। विवाह भी हो गया।

विवाह के सातवें दिन दस हज़ार असली बराती आये। मणिमन्त का माथा

ठनका। उसने रत्नपाद के पास जाकर सारा किस्सा सुनाया। "मुझे यह खबर मिली थी कि आप लोगों के जहाज डूब गये हैं। इसलिये मैंने ठीक मुहूर्त में अपनी लड़की की किसी और से शादी कर दी।"

"यह जरूर सही है कि समुद्र में, पहाड़ों से टकराकर, जहाजों की पेन्दी में छेद हो गये थे। प्राण बचाने के लिये, भारी, चीज़े हमने समुद्र में फेंक दीं, जैसे तैसे छेदों को भरकर, सही सलामत हम पहुँचे हैं। और अब तुम हमारा यों अपमान करते हो!" रत्नपाद ने डाँटा-डपटा।

"मुहूर्त के बाद आने से क्या फ़ायदा!" मणिमन्त ने पूछा।

"क्या विवाह के लिये कोई मुहूर्त होता है! जब विवाह हो, तभी मुहूर्त है।"—रत्नपाद ने कहा।

यह सुनते ही मणिमन्त अपने को काबू में न रख सका। दोनों खूब आपस में झगड़ने लगे। "देख! मैं तेरा क्या करता हूँ!"—रत्नपाद ने डराया। उस आदमी से बात करना बेकार है, यह सोचकर मणिमन्त घर वापिस चला आया। पर उसे भय सता रहा था। जब चित्रभानु को मालूम हुआ कि उसके ससुर इस तरह डर रहे हैं, उसने अपने ससुर से कहा—"रत्नपाद शायद इस भरोसे में है कि यह स्त्रियों का राज्य है, और चाहे वह कुछ भी करे, उसे कोई पूछनेवाला नहीं है। जब तक मैं हूँ, आप न घबरायें। मैं सब देख लूँगा।"

रत्नपाद के आदमी, लाठी, डंडे लेकर मणिमन्त के घर पर टूट पड़े। मणिमन्त घबरा गया। पर चित्रभानु कटार लेकर आगे लपका, और जो कोई आगे बढ़ा,

उसे साफ़ करता गया। कुछ तो उसकी तलवार के शिकार हुए, कुछ घायल हुए, और बाकी डर-डराकर भाग गये।

पर रत्नपाद को तब भी अक्ल न आई। उसने राजमहल में आकर मणिमन्त के खिलाफ़ शिकायत की। मुकुटरत्ना सिंहासन पर बैठी थी और पुष्पकेतु भी उसकी बगल में बैठा था। रत्नपाद और मणिमन्त की शिकायतें सुनकर, रानी कुछ निर्णय न कर पाई। उसने पति से कहा—"आप ही इसका फ़ैसला कीजिये।"

पुष्पकेतु ने मणिमन्त के दामाद के लिये आदमी भेजे। उन्होंने वापिस आकर कहा "महाप्रभु! वे आने से इनकार कर रहे हैं।"

पुष्पकेतु यह जवाब सुनकर आग-बबूला हो गया। पिंगल और कुछ सैनिकों को लेकर वह मणिमन्त के घर गया। यह सोचकर कि उसको पकड़ने के लिये सेना भेजी गई है, चित्रभानु तलवार लेकर बाहर आ खड़ा हुआ। पर वे जब पास आये तो आपस में एक दूसरे को पहिचान कर बड़े आश्चर्य चकित हुए।

"चित्रभानु! हम दोनों का विवाह हो गया है। तेरी भी शादी हो गई होगी, इसका हमें स्वप्न में भी ख्याल न था।" पुष्पकेतु ने कहा।

चित्रभानु भी उनके साथ राजमहल गया। पुष्पकेतु ने रत्नपाद की शिकायत का यों फ़ैसला किया—"यद्यपि क़सूर उसी का था, पर चूँकि वह इसके पहिले ही बहुत नुक़सान उठा चुका था, इसलिये उसको और सज़ा नहीं दी जा सकती।" मणिमन्त से उसको हरजाना दिलवाकर उसे भेज दिया गया।

आदिम मनुष्य

लगभग दस लाख वर्ष पहिले इस दुनिया में मनुष्य का जन्म हुआ। स्तन प्राणियों में एक शाखा "प्रैमेट्स" कहा जाता है। इनके हाथ और पैरों में पाँच पाँच अंगुलियाँ होती थीं। इनका दिमाग़ भी बढ़ा हुआ था। उनके शरीर में धमनियाँ भी थीं। 'प्रैमेट्स' प्राणी से ही मनुष्य पैदा हुआ। मनुष्य को 'होमोसेपियन्स' (बुद्धिशाली) कहते हैं।

इस सृष्टि में, पैरों के बल, सीधा खड़ा होनेवाला जन्तु मनुष्य एक ही है। इस कारण वह अपने हाथों द्वारा काम करने और चीज़ें पकड़ने लगा। मनुष्य का दिमाग़ गोरिल्ला से शारीरिक अनुपात में छः गुना अधिक है। सृष्टि में, जहाँ तक बुद्धि का सम्बन्ध है, मनुष्य के बाद गोरिल्ला का नम्बर आता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि तीन करोड़ वर्ष से पहिले मनुष्य और वानर के पूर्वज एक ही प्राणी के वंशज थे। २ करोड़ वर्ष पहिले भूमि की बनावट में बहुत परिवर्तन हुए। जो समशीतोष्ण प्रान्त था, वह पूरी तरह ठण्डा हो गया। वन पूर्णतया नष्ट हो गये। वे 'प्रैमेट्स' ही बाकी रहे। २ करोड़ वर्ष तक यही। सिलसिला बना रहा। तब एक ऐसा प्राणी पैदा हुआ, जो मनुष्य से मिलता-जुलता था। उसका दिमाग़ यद्यपि गोरिल्ला के दिमाग़ से ज्यादह अधिक न था; मगर दाँत व अन्य अंग मनुष्य से मिलते थे।

दस या पाँच लाख वर्ष पहिले, आदिम मनुष्य पैदा हुआ। इसका नाम 'पिथिकन त्रोपस' था। यह चार लाख वर्ष पहिले नष्ट हो गया था। उसकी जगह 'सिनस त्रोपस' पैदा हुआ। इसीको 'पेकिंग मनुष्य' कहते हैं। इसके मुँह पर मूँछें वगैरह कुछ न थीं। साधारण मनुष्य की बुद्धि से, इसका दिमाग़ दो तीन गुना कम था। परन्तु शरीर में, यह बिलकुल मनुष्य के समान था।

यों लोगों में बुद्धि का परिमाण बढ़ा। आज की सभ्यता का निर्माण करने के लिये मनुष्य को बहुत परिश्रम करना पड़ा। मनुष्य के आदिकाल से अब तक, ४९ फ़ी सदी समय, प्रस्तर युग के बीतते बीतते ही समाप्त हो गया।

तीन सन्देह

एक बार किसी राजा को ये प्रश्न सताने लगे कि कोई काम कब प्रारम्भ करना चाहिये? उसके लिए किसकी सलाह लेनी चाहिये? इस बारे में उत्तम धर्म क्या है? इसलिये राजा ने घोषणा करवाई कि जो कोई इन तीन प्रश्नों का उत्तर देगा, उसको बहुत ईनाम मिलेगा।

घोषणा सुन बहुत-से ज्ञानी राजा के पास आये। परन्तु वे राजा के प्रश्नों का ठीक तरह जवाब न दे सके।

पहिले प्रश्न का, कई ने बताया कि पंचांग टटोलने पर उत्तर मिल सकता है। कई ने कहा कि काम के अनुसार अनुकूल समय भी बदलता है। कई और ने कहा कि कार्य समय की परवाह न कर, आगे-पीछे कर लेना चाहिये। कहने का मतलब यह कि जो जिसको सूझा वह उसने कह दिया।

दूसरे प्रश्न का—सलाह किसकी लेनी चाहिये?—कईने उत्तर दिया कि मन्त्री की सलाह लेनी चाहिये। किसी ने कहा कि अच्छे ब्राह्मणों से परामर्श करना चाहिये। और कई ने कहा कि सामन्तों की सलाह ली जानी चाहिये।

"उत्तम धर्म क्या है?" इसके जवाब में बताया गया कि शास्त्रों का ज्ञान पाना उत्तम धर्म है। कई की यह राय थी कि व्रत, पूजा-पाठ करना काफ़ी है। कुछ का कहना था कि युद्ध उत्तम धर्म है।

पर राजा को एक का भी उत्तर पसन्द न आया। उसने ईनाम भी किसी को न दिया। पास के वन में एक ऋषि रहा करते थे। राजा ने सोचा कि उनसे मिलने पर वे सन्देह निवारण कर सकते हैं।

टाल्स्टाय की एक कहानी के आधार पर

परन्तु वह महर्षि अपना आश्रम छोड़कर कहीं आता-जाता न था और सिवाय मामूली आदमियों के किसी से मिलता-जुलता न था। इसलिये राजा मामूली वेश धारण कर, दो चार नौकर ले घोड़े पर सवार हो आश्रम गया। आश्रम के बाहर ही वह घोड़े पर से उतरा, नौकर-चाकरों को वहीं खड़े रहने को कह, वह स्वयं पैदल महर्षि की कुटी की ओर गया

महर्षि कुटी के सामने पौधे लगाने के लिए क्यारियाँ बना रहे थे। राजा का नमस्कार स्वीकारकर, वे यथापूर्व क्यारियाँ बनाते गये।

राजा ने उनसे कहा—"स्वामी! मैं आपसे अपने तीन सन्देहों का निवारण करवाने आया हूँ—"कोई काम कब आरम्भ करना चाहिये! किसकी सलाह लेनी चाहिये! उत्तम धर्म क्या है!"

महर्षि ने थोड़ी देर के लिए ज़मीन खोदना बन्द किया और राजा के प्रश्न सुने। फिर बिना कुछ कहे ज़मीन ठीक करने लगे। महर्षि बूढ़े थे। तपस्या आदि के कारण बहुत दुर्बल हो गये थे। राजा ने उनसे कहा—"आप आराम कीजिये। मैं ज़मीन
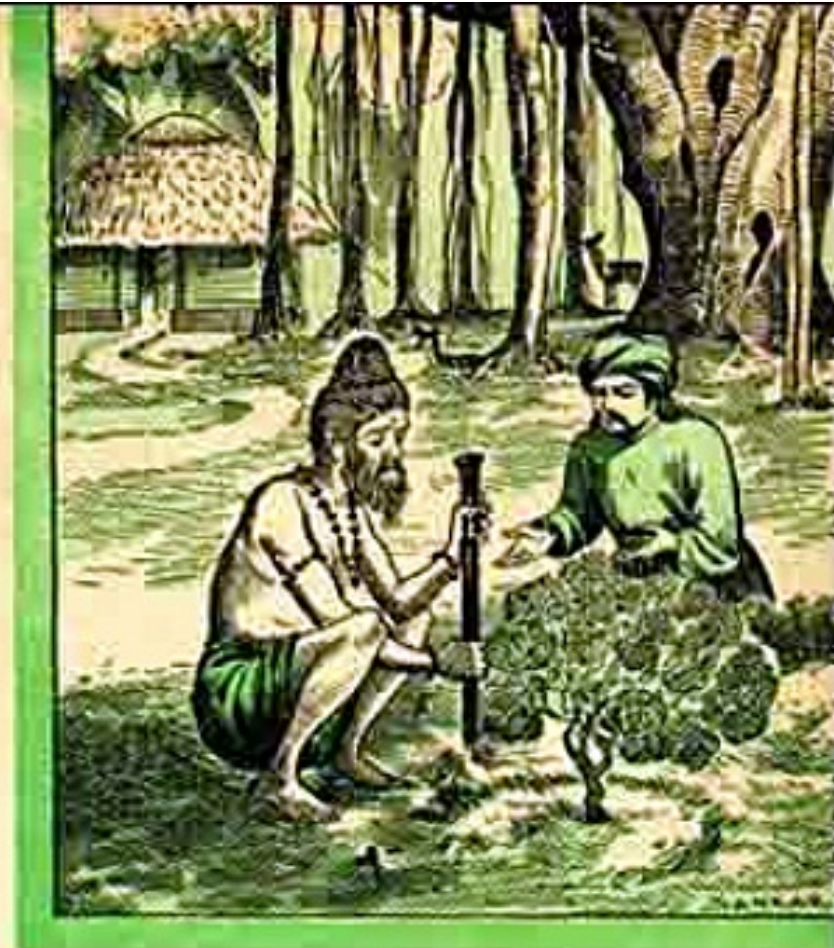
खोद दूँगा।" खुरपा राजा को देकर महर्षि ज़मीन पर लेट गये।

चार क्यारियाँ बनाकर राजा ने महर्षि के सामने फिर अपने सन्देह प्रकट किये। पर महर्षि ने बिना कुछ जवाब दिये, राजा के हाथ से खुरपा लेना चाहा। परन्तु राजा ने खुरपा नहीं दिया। सूर्यास्त समय तक राजा स्वयं क्यारियाँ बनाता रहा। काम पूरा हो गया। राजा ने खुरपा नीचे रख कर कहा—"स्वामी! मैं इसलिये आया था कि आप ज्ञानी हैं, और मेरा सन्देह दूर कर देंगे। अगर आप उनके उत्तर न

जानते हो तो साफ़ कह दीजिये, मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

"कोई आता मालूम होता है! देखें, क्या बात है।"—महर्षि ने कहा। राजा ने पीछे मुड़कर देखा तो कोई व्यक्ति आश्रम की ओर आ रहा था। वह अपने हाथों से पेट दबाये हुआ था। उसके अंगुलियों में से खून बह रहा था। वह राजा तक कराहता आया और फिर बेहोश गिर गया। जब महर्षि और राजा ने उसके कपड़े उतारकर देखा तो उसके पेट पर बड़ा घाव था। राजा ने जब उसका घाव धोकर साफ़ किया तो खून आना बन्द हो गया। उसको होश भी आ गया। उसने पीने के लिए कुछ माँगा। राजा ने कुटी में से पानी लाकर उसे पिलवाया।

इतने में अन्धेरा हो गया। राजा और महर्षि दोनों मिलकर घायल व्यक्ति को कुटी में ले गये। बिस्तरे पर लाते ही उस आदमी ने आँखें मूँद लीं। राजा भी क्यारियाँ खोदने के कारण खूब थक गया था। इसलिये वह भी ज़मीन पर वहीं सो गया। खूब नींद आई। सवेरे जब वह उठा, तो वह यह न जान सका

कि वह कहाँ था। पर बिस्तेर पर पड़ा व्यक्ति एक नज़र से निरन्तर उसी की ओर देख रहा था।

राजा को नींद से उठा देख उस व्यक्ति ने कहा—"महाराज! मुझे क्षमा कीजिये"

"तुम कौन हो, यह भी मैं नहीं जानता। फिर क्या क्षमा करूँ!"—राजा ने पूछा।

"आप तो नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, पर मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं! आपने कभी मेरे भाई को फाँसी चढ़ाकर उसकी सम्पति हड़प ली थी। तब मैंने शपथ ली थी कि मैं आपको मार कर अपने भाई का बदला लूँगा। मैं आपका शत्रु हूँ। यह जानकर कि आप महर्षि को देखने के लिये आश्रम गये हैं, आपको वापिस जाते समय मारने के उद्देश्य से मैं एक झाड़ी में छुपा हुआ था। पर आप बहुत देर तक न आये और मैं आपकी तलाश में निकला। इस बीच में आपके अंग-रक्षकों ने मुझे देख लिया और घायल कर दिया। मैं जैसे तैसे भाग निकल आया। अगर आप मेरे घाव को धो-धाकर मरहम पट्टी न करते, तो इतना खून बह जाता कि मैं मर जाता। मैंने आपको मारने की सोची थी

और आपने मुझे मरने से बचाया। अगर मुझे आप जीने दें, तो मैं और मेरे लड़के आपकी ज़िन्दगी भर सेवा करेंगे।"—उस व्यक्ति ने कहा।

इतनी आसानी से शत्रु से समझौता हो जाने पर राजा ने सोचा कि राज-वैद्य से उसकी चिकित्सा करवायेगा और उसके भाई की सम्पत्ति भी उसको वापिस कर देगा।

राजा जब कुटी से बाहर निकला तो महर्षि पौधे लगा रहे थे। राजा ने उनके पास जाकर नमस्कार करके कहा— "स्वामी! आपने मेरे सन्देह पूरे नहीं किये!"

महर्षि ने हँसकर कहा—"तुम्हारे सन्देह सब पूरे हो चुके हैं। तुम्हें समझ में नहीं आया! कल तुम मेरी दुर्बलता देखकर क्यारियाँ बनाने लगे। अगर तुम बाहर चले आते तो तुम्हें यह आदमी मार देता। मतलब यह हुआ कि उस समय तुम्हारे लिये प्रधान व्यक्ति मैं था, और कार्य क्यारियाँ बनाना। मेरी सहायता करना ही तुम्हारा प्रधान धर्म था। परन्तु थोड़ी देर बाद यह घायल आदमी भागता आया। तुमने सुसमय में उसकी सेवा की। वह तुम्हारे लिये प्रधान व्यक्ति था, उसकी सहायता करना तुम्हारा धर्म था। इसलिये याद रखो—वर्तमान समय ही सुसमय है—क्योंकि उसी समय हमारे आधीन शक्ति होती है। तुम्हारे लिये वही मुख्य व्यक्ति है, जो तुम्हारे साथ है। क्योंकि कौन कह सकता है कि दूसरे किसी व्यक्ति से हमारा सम्बन्ध होगा कि नहीं; होगा तो कैसे होगा, इसलिए हमारा प्रधान धर्म उसकी सहायता करना है। क्योंकि उसी कार्य के लिये हमने यह जन्म लिया है।"

राजा इन उत्तरों को सुन बहुत सन्तुष्ट हुआ और महर्षि से विदा लेकर खुशी खुशी राज महल पहुँचा।

चालाक माँ-बेटी

[५]

उस दिन रात को जब व्यापारी नौकरों के साथ घर पहुँचा तो किवाड़ों को बन्द पा उसको आश्चर्य हुआ। घर की हर चीज़ उसने देखी। पर कुछ भी चोरी न गया था।

व्यापारी के नहाने के लिए एक नौकर रस्सी लेकर कुएँ से पानी लाने गया। वह कुएँ से पानी खींचने लगा। पर उसको ऐसा मालूम हुआ, जैसे कोई रस्सी नीचे की ओर खींच रहा हो। 'अरे! भूत, भूत" चिल्लाता चिल्लाता, वह अपने मालिक के पास गया। व्यापारी स्वयं रोशनी लेकर वहाँ गया। जब उसने 'पारा' को रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ते देखा तो वह भी हक्का-बक्का रह गया।

"बदमाश! कौन है तू! मेरे कुएँ में तुझे क्या काम!" व्यापारी ज़ोर से चिल्लाया।

"हुज़ूर! यह कौन-सा देश है! क्या गाँव है! मैं मिश्र का रहनेवाला हूँ। मैं जब नील नदी में नहा रहा था तो मैं एक भँवर में फँस गया! न मालूम, मैं कितने नीचे चला गया। जब मैं पानी से ऊपर आया, तब मैंने अपने को आपके कुएँ में पाया।" 'पारा' ने झूटमूठ कहा।

व्यापारी ने विश्वास कर लिया।

"बेटा! तुम्हारा तजुर्बा बहुत अजीब नज़र आता है। यह बग़दाद शहर है। बहुत दूर आ गये हो! कपड़े देता हूँ, पहिन लो। आज रात यहीं सो रहो। कल सबेरे उठकर अपने गाँव के लिए रवाना हो जाना"—व्यापारी ने कहा।

अगले दिन 'पारा' के घर पहुँचने पर, अहमद की जान में जान आई। जब

कुमारी रज़िया रेहाना

अहमद को 'पारा' के ठिकाने का पता न लगा, तो वह न खा ही पाया, न सो पाया। सवेरे उसने कोतवाल हसन की भी सलाह ली। वे बातें कर ही रहे थे कि 'पारा' वहाँ आ पहुँचा।

उसने दोनों का अपना किस्सा सुनाया। हसन ने सुनकर मुस्कराते हुए कहा—"इतना काम करनेवाली इस बगदाद शहर में सिर्फ़ एक ही एक है। और वह कबूतरों द्वारा डाक भेजनेवाली दिल्लेला की लड़की ज़ीनाब है। तुम उसका क्या करना चाहते हो? बोलो न जल्दी!"

"करना क्या है? उससे शादी करने की मर्ज़ी है।"—'पारा' ने कहा।

"इस कड़वे तजुर्बे के बावजूद भी!" हसन ने पूछा।

"चाहे वह लड़की कुछ भी करे, मैं उसको माफ़ कर दूँगा। वह मेरी पत्नी हो जाय तो मुझे और कुछ नहीं चाहिये।"—'पारा' ने साफ़ साफ़ कहा।

"तो तुम्हारी मर्ज़ी पूरी होनी ही चाहिये। तुम भी तो कम खूबसूरत नहीं हो। अच्छी जोड़ी बनेगी।"—हसन ने मुस्कराते हुए कहा।

"अरे हसन भाई! ज़रा अपने दोस्त की मदद तो करो।"—अहमद ने कहा।

हसन ने 'पारा' को एक सलाह दी।

'पारा' ने अपने शरीर पर काला रंग पोत लिया और नीग्रो के समान कपड़े भी पहिन लिये। थोड़े-बहुत पैसे और भंग लेकर वह शाक-सब्जी खरीदने बाज़ार गया। उसने वहाँ दिलैला के रसोइये को खोजकर कहा—"अरे भाई! मैं इस शहर में नया आया हूँ। अपनी जात के आदमी हो। बहुत दिनों बाद दिखाई दिये हो। आओ थोड़ी पी आयें— शराब।"

दिलैला के रसोइये ने कहा—"मुझे फ़ुरसत नहीं है। तुम हमारे घर क्यों नहीं आते! वहाँ तुम्हें तरह तरह के शराब, खाने-पीने की चीज़ें दूँगा।"

'पारा' भी यह ही चाहता था। वह उस नीग्रो के साथ दिलैला के घर गया। रसोई घर में घुसा। इस बीच में दिलैला और ज़ीनाब भोजन के लिए आये। रसोइया उनके खाने-पीने की चीज़ तैयार कर एक एक करके उनके सामने ले गया। उसके बाहर जाने पर 'पारा' ने पीनेवाले लोटों में भंग मिला दी।

थोड़ी देर में 'पारा' की चाल कामयाब हुई। दिलैला, ज़ीनाब, चालीस नीग्रो गुलाम, नीग्रो रसोइया, और तो और, शिकारी कुत्ते भी भंग के असर से नशे में पड़े थे।

'पारा' जी भरके घर में घूमा। दिलैला के सरकारी कपड़े, सोने की टोपी नीग्रो के लाल ज़री के कपड़े, इकट्ठे कर उसने एक बड़ा गठ्ठर बाँध लिया और ऊपर जाकर सब कबूतरों को एक पिंजरे में बन्द कर दिया। "यह काम करनेवाला सिवाय बहादुर 'पारा' अलि के और कोई नहीं है" यह एक काग़ज़ पर लिखकर, वह कबूतर, और पोशाकें लेकर सीधे अहमद के घर पहुँचा।

जब दिलैला को होश आई, तब तक अन्धेरा हो चुका था। उसने 'पारा' का लिखा हुआ काग़ज़ देखा। पता लगा कि वह वही सामान ले गया था, जिनका खलीफ़ा से ताल्लुक था।

दिलैला काफ़ी देर तक सोचती रही। अगर यह बात फैल गई तो उसकी इज़्ज़त पर धब्बा लगता और नौकरी भी खतरे में पड़ती। 'पारा' से बदला लेने से भी कोई फ़ायदा न था। उससे अहमद ने ही यह काम करवाया होगा। उसके हाथ-पैर पकड़कर चीज़ों को वापिस लेने के सिवाय और कोई रास्ता न था। उसने अहमद से बदला लेने के लिए, अपनी लड़की द्वारा 'पारा' की फ़जीहत करवाई थी और अब अहमद ने 'पारा' द्वारा उन पर बदला ले लिया था। अब दोनों में राज़ी हो सकती है। यह सोच "मैं अभी आई" कह कर दिलैला अहमद के घर गई।

उसके वहाँ पहुँचने पर अहमद, हसन, 'पारा' अलि वग़ैरह, खाना खा रहे थे। उसको देखते ही, अहमद और हसन ने सिर

झुकाकर सलाम करते हुए कहा—"आइये, तशरीफ़ लाइये।" बड़े अदब से उसकी अगवानी की।

जब दिलैला को पता लगा कि वे कबूतरों का शोरवा खा रहे थे तो दिलैला का कलेजा थम-सा गया, उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। उसने काँपती हुई आवाज़ में पूछा—"भले ही अहमद को मुझ पर गुस्सा हो, पर क्या उसे खलीफ़ा के डाक के कबूतरों को पकड़वाकर इस तरह खाना चाहिये था!

"अगर यह मालूम होता कि ये डाक के कबूतर हैं तो हम पकाकर न खाते" 'पारा' ने कहा। सब हँसने लगे।

हसन ने दिलैला को मनाते हुए कहा—"तू फ़िक्र न कर। डाक के कबूतर सही-सलामत हैं। खलीफ़ा की दी हुई चीज़ें भी सब ठीक हैं। परन्तु इस छोटे लड़के की एक छोटी सी मर्ज़ी है। अगर तूने उसकी मर्ज़ी मंजूर कर ली तो हम तेरी पोशाक, डाक के कबूतर सब वापिस कर देंगे।"

"वह मर्ज़ी क्या है, बताओ तो!" क्या तुम नहीं जानते कि मैं बेबस कमज़ोर औरत हूँ।"—दिलैला ने कहा।

"और कुछ नहीं। यह लड़का अली—पारा तुम्हारी लड़की ज़ीनाब से शादी करना चाहता है।"—हसन ने बताया।

"अरे! या खुदा! क्या इसी के लिए तुमने मुझे इतना तंग किया है! अगर मैं मान भी जाऊँ, तब भी क्या फ़ायदा! अगर ज़ीनाब न मानी तो कुछ न हो सकेगा। क्योंकि उसके बड़े होने तक उसका संरक्षक है मेरा बड़ा भाई ज़ुरेक। जब तक वे न मान जायें, तब तक यह शादी नहीं हो सकती। आप लोग तो ज़ुरेक को जानते ही हैं। मैं भी उसे मनाने की कोशिश

करूँगी ; पर उसको मनाने की पूरी जिम्मेवारी 'पारा' अलि की है।"— दिलैला ने कहा।

जुरेक को जैसे तैसे मनाकर, 'पारा' ने ज़ीनाब से शादी करने की ठानी।

दिलैला अपने कपड़े और डाक के कबूतर लेकर चली गई।

दिलैला का भाई जुरेक भी किसी ज़माने में पक्का चोर था। अब बुढ़ापा आ गया था। इसलिये चोरी छोड़ दी थी। मछली बेचकर जिन्दगी गुज़र कर रहा था। पर अब भी उसमें कई कमाल की खूबियाँ थीं।

जुरेक ने अपनी दुकान की ओर लोगों की दृष्टि खींचने के लिए एक बात सोची। उसने यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि उसकी दुकान के दरवाज़े पर हज़ार दीनारें एक थैली में रखी हैं। जो कोई उन्हें ले जायगा, वे उसी की हो जायेंगी। जैसे भी बन सके, उन दीनारों को लेने के लिए लोग हज़ारों की तादाद में आते और उसकी मछलियाँ खरीदकर जाते। परन्तु कोई भी उस थैली को न ले जा सका। क्योंकि जब कोई उस थैली को कोई छूता तो सारी दुकान में घंटियाँ बजने लगतीं, ढोल की

आवाज़ आती। यह सुनते ही जुरेक भागा भागा आता और चोर को पकड़ लेता। नहीं तो उन पर रांगे की गोलियाँ मारता। कई के हाथ पैर टूट गये थे।

'पारा' अलि जुरेक से आकर मिला। उसने अपना परिचय दिया। बताया कि वह अहमद के यहाँ ठहरा हुआ था और ज़ीनाब से शादी करना चाहता था। उसने शादी के लिए उसकी अनुमति माँगी। पर जुरेक न माना।

'पारा' को सूझा कि जुरेक को, उसकी दीनारों की थैली चुराकर, प्रभावित करना चाहिये, तब वह शादी के लिए मान जायगा। इसलिये, वह गर्भिणी स्त्री का वेष बनाकर जुरेक की दुकान पर गया। मछली का भाव करते करते उसने "प्रसव वेदना" का बहाना किया। जुरेक घबरा गया और अन्दर पत्नी को बुलाने गया। उस समय 'पारा' ने झट दीनारों की थैली पर हाथ मारा। तुरत दुकान में घंटियाँ और ढोल बजने लगे। जुरेक दुकान में आया और उसने थैली लेकर भागते हुए 'पारा' अलि पर रांगे की गोली फेंकी। गोली की चोट से 'पारा'

भलि गिर गया। वह उठकर लड़खड़ाता लड़खड़ाता अहमद के घर पहुँचा।

जो यह नज़ारा देख रहे थे, उन्होंने जुरेक को बुरी तरह डांटा-डपटा। "एक तो दीनारों को लटका कर लोगों को ललचाते हो! फिर उनको रांगे की गोलियों से मारते हो! शर्म नहीं आती!"

"इन बातों में क्या रखा है!" जुरेक ने बेपरवाही से कहा।

घाव ठीक होने पर 'पारा' जुरेक की दुकान की ओर फिर गया। वह जुरेक के हाथ मरने को तैयार था पर जीनाब से शादी किये बगैर रहने के लिये तैयार न था।

इस बार 'पारा' नौकर का वेष धर हाथ में थैला लेकर गया। जुरेक के हाथ में उसने पांच तांबे के सिक्के रखे। "मेहरबानी करके, जल्दी तले, गरमा गरम मछली मुझे दिलवा दो।"

"गरमागरम मछली चाहते हो तो आग जलाने तक ठहरो" यह कह जुरेक अन्दर गया। तुरत 'पारा' ने दीनारों की थैली पकड़ी। घंटे और ढोल बजने लगे। एक छलांग में जुरेक दुकान में आ पहुँचा। "तू समझता है कि मैंने तुझे पहिचाना नहीं है।" उसने रांगे की गोली 'पारा' के सिर का निशाना बनाकर फेंकी। 'पारा' जानता ही था कि वह रांगे की गोली फेंकेगा, इसलिये वह झुक गया। रांगे की गोली ठीक जाकर एक दही के कसोरे में लगी, जिसे एक नौकर गली में ले जा रहा था। नौकर के पीछे एक काज़ी चला आ रहा था। दही उसके कपड़े और दाढ़ी पर गिरा।

आस-पड़ोस के लोगों ने जुरेक से कहा—"इसका बदला तुझे ज़रूर मिलेगा।"

(अभी और है)

बताओगे ?

★

१. आजकल लोक सभा के कौन अध्यक्ष हैं ?

२. वर्तमान आन्ध्र में कितने विश्व विद्यालय हैं ? और वे कौन-कौन-से हैं ?

३. ऐसे कूटनीतिज्ञ का नाम बताओ, जो हाल में ही केन्द्रीय मन्त्रि-मंडल में लिये गये हैं ?

४. नागा जाति कहाँ रहती है ?

५. हिन्दुस्तान में सबसे अधिक गन्ना कहाँ पैदा होता है ?

६. क्या अब भी भारतीय सरकार गरमियों में शिमला जाती है ?

७. ऐसा देश बताओ, जहाँ आधी रात को भी सूर्य दिखाई देता हो ?

८. प्रचलन में, हिन्दी और तेलुगु के बाद किस भाषा का नम्बर आता है ?

पिछले महीने के 'बताओगे' के प्रश्नों के उत्तर :

१. असामी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, काश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु, और उर्दू।

२. अमृतसर में, श्री. यू. एन. ढेबर.

३. ए. ज़ेड. फ़ीजो.

४. डलहोज़ी—७,८६७.

५. भारत में.

६. गौतम बुद्ध.

७. नागार्जुन एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य थे, जिनको महायान का प्रणेता समझा जाता है।

८. तिब्बत, सीलोन, बर्मा.

९. बाद में।

१०. बुद्ध के निर्वाण से—४८७, BC.—(वैशाली पूर्णिमा)

अजीब चाल

विक्रमार्क हार मानना न जानता था। वह पेड़ से फिर शव को उतारकर कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की तरफ़ चल पड़ा। "राजा! तुम इतनी मेहनत कर रहे हो। अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो, तो सुनो, मैं शीलवती की कहानी सुनाता हूँ"—बेताल ने यह कहानी सुनाई :

किसी ज़माने में एक यज्ञदत्त नाम का ब्राह्मण, जिसके माँ-बाप बचपन में ही मर गये थे, काशी में खूब पढ़-लिखकर, रोज़ी की तलाश में विशालपुर पहुँचा। उस नगर का राजा धर्मपाल था। उसने यज्ञदत्त को नौकरी ही न दी, बल्कि एक अच्छी-सी लड़की से विवाह करवाकर, उसको घरवाला भी बना दिया। कालक्रम

से यज्ञदत्त के एक लड़की पैदा हुई। उसने उसका नाम शीलवती रखा।

जब रानी ने नामकरण संस्कार के दिन उसे देखा तो उसका मातृत्व भी जग उठा। रात-दिन वह लड़की को अपने पास रखती, स्वयं उसको खिलाती-पिलाती, देख-भाल करती।

रानी की अपनी सन्तान कोई न थी। परन्तु शीलवती के आते ही, वह भी गर्भिणी हुई और नौ मास बाद उसके भी लड़की पैदा हुई। उस लड़की का नाम कलावती रखा गया। सब का अनुमान था कि रानी अगर माता बनी थी तो उसका कारण शीलवती थी। यद्यपि वह खुद एक लड़की की माँ हो गई थी पर शीलवती के लिये उसका प्रेम तनिक भी कम न हुआ। कलावती उसको "बहिन" कहकर पुकारा करती। जब वे दोनों बड़ी हुईं तो एक ही गुरु के पास पढ़ने भेजी गईं।

ज्यों ज्यों समय बीतता जाता था, शीलवती के बारे में उसके पिता यज्ञदत्त का भय भी त्यों त्यों बढ़ता जाता था। शीलवती ब्राह्मण कन्या की तरह न थी। अन्तःपुर में उसका पालन-पोषण हुआ था, इसलिये वह अधिक क्षत्रिय कन्या-सी

लगती थी। यज्ञदत्त को यह डर था कि कहीं वह अपने विवाह के लिये स्वयंवर न रचे। इसलिये उसने शीलवती के लिये एक सम्बन्ध ढूँढा और विवाह के लिये शुभ मुहूर्त भी निश्चित कर दिया।

यह मालूम होते ही शीलवती का मन बड़ा दुखा। उसने और कलावती ने पहिले ही एक शपथ ले ली थी कि वे दोनों एक ही साथ विवाह करेंगी। इसलिए उसने वह विवाह न करने की ठानी।

एक दिन जब वे बगीचे से वापिस आ रही थीं तो शीलवती ने कलावती से कहा—"मैं अभी नदी में स्नान करके आती हूँ! तुम चलो।" वह नहाने चली गई। वह नदी किनारे एक पत्थर के नीचे, अपने कपड़े रख ब्रह्मचारी के वस्त्र पहिन सिर के बाल बाँध अकेली ही निकल पड़ी।

जब "बहिन" बहुत देर तक न आई, तो कलावती ने सैनिकों को नदी किनारे भेजा। उन्होंने शीलवती के कपड़े लाकर कहा—"वे कहीं नहीं दिखाई दी हैं।" यह जानकर कि शीलवती नदी में डूबकर मर गई है, सबको बड़ा दुःख हुआ। कलावती ने यज्ञदत्त से कहा—"जब से आपने बहिन की शादी निश्चित की थी, तभी से उसका मन अच्छा न था। वह विवाह करना न चाहती थी"। यह सुनते ही यज्ञदत्त को लगा कि उसकी पुत्री ने जान बूझकर आत्म-हत्या की है और उसकी आत्म-हत्या का वह स्वयं ही कारण था। वह पागल-सा हो गया। पत्नी को साथ लेकर वह देश छोड़कर चला गया!

और इधर शीलवती ब्रह्मचारी का वेश धारण कर, चलते चलते, ब्रह्मस्थल नाम के गाँव में पहुँची। गाँव में उससे कई ने पूछा—"क्यों बेटा, तुम कौन हो?"

शीलवती उनसे कहती—"मैं एक गरीब ब्रह्मचारी हूँ। मेरा नाम कृतवर्मा है। मेरा कोई नहीं है। पढ़ने के लिये काशी जा रहा हूँ।"

"पढ़ना ही हो तो क्या बेटा, काशी जाना जरूरी है! इस गाँव में सोमभट्ट नाम का एक पंडित है। उसने भी काशी में पढ़ा था। उसके पास पढ़ सकते हो।" गाँववाले उसको सोमभट्ट के घर ले गये। सोमभट्ट, ब्रह्मचारी वेश धरे शीलवती को देखकर बहुत खुश हुआ। वह उसको पढ़ाने-लिखाने के लिये मान गया।

सोमभट्ट के एक लड़की थी। उसका नाम सत्यवती था। यों तो देखने में भी वह बदसूरत थी, तिस पर चेहरे पर चेचक के दाग़ थे। एक ही आँख रह गई थी। वह विवाह के लायक बड़ी हो चुकी थी। सोमभट्ट अपनी लड़की को घर से कहीं बाहर न जाने देता। क्योंकि वह जी जान से उसके लिये वर ढूँढ़ रहा था। आखिर, विद्याभास्कर नामक एक ब्राह्मण उससे विवाह करने के लिये मान गया। लेवा-देवा भी हो गई थी। परन्तु शादी के दिन से पहिले किसी ने कहा कि सोमभट्ट की लड़की बहुत ही बदसूरत है। इसलिये उसने ज़िद पकड़ी कि बिना लड़की को देखे वह विवाह न करेगा। उसने सोमभट्ट के पास ख़बर भी भिजवा दी कि थोड़े दिनों में वह लड़की को देखने आयेगा।
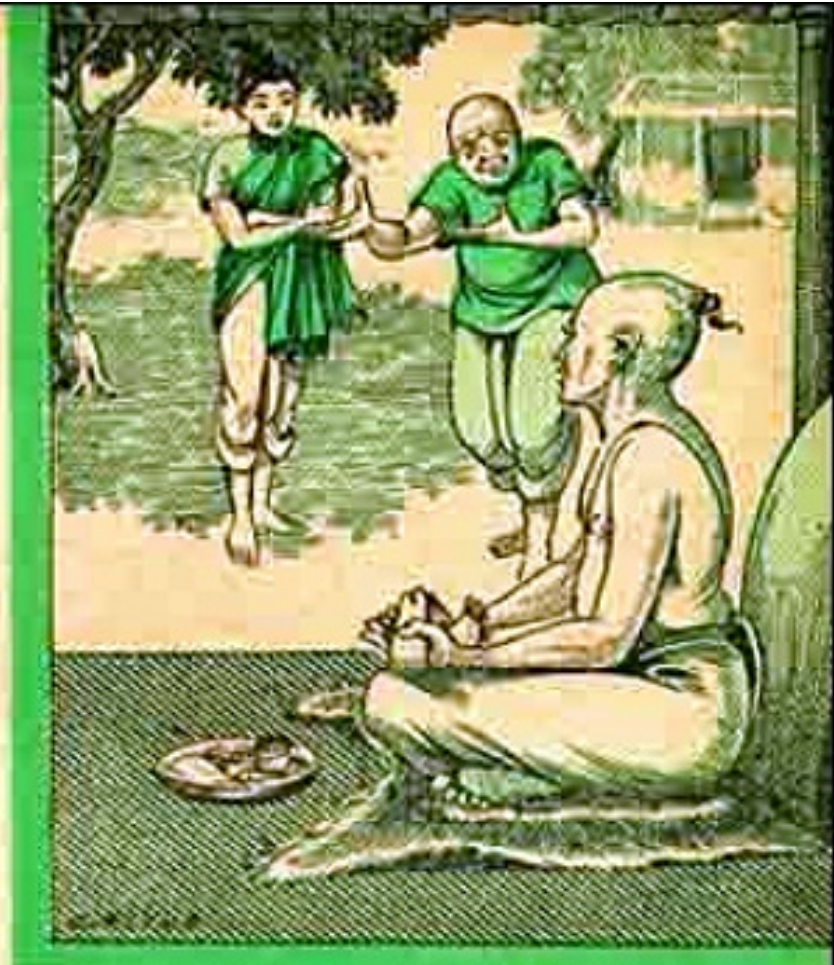
सोमभट्ट को इस झंझट से बाहर निकलने के लिये एक उपाय सूझा। उसने शीलवती को अलग बुलाकर कहा—"देखो, बेटा! तुम्हें मेरी एक मदद करनी होगी। यह अच्छा ही हुआ कि तुम्हारे देश के ब्रह्मचारी औरतों की तरह बाल रखते हैं।

क्या तुम एक बार स्त्री का वेष धारण कर सकोगे!" उसने अपनी लड़की के बारे में सब कुछ सच सच बता दिया।

वह तुरंत सोमभट्ट का सुझाव मान गई। थोड़े दिनों में विद्याभास्कर दुल्हिन देखने आया। जब शीलवती को अच्छी जाकेट, साड़ी और गहने पहिनाये गये तो वह बहुत ही खूबसूरत दीखने लगी। उसको देखकर विद्याभास्कर बहुत ही खुश हुआ। वह विवाह के लिए मान गया।
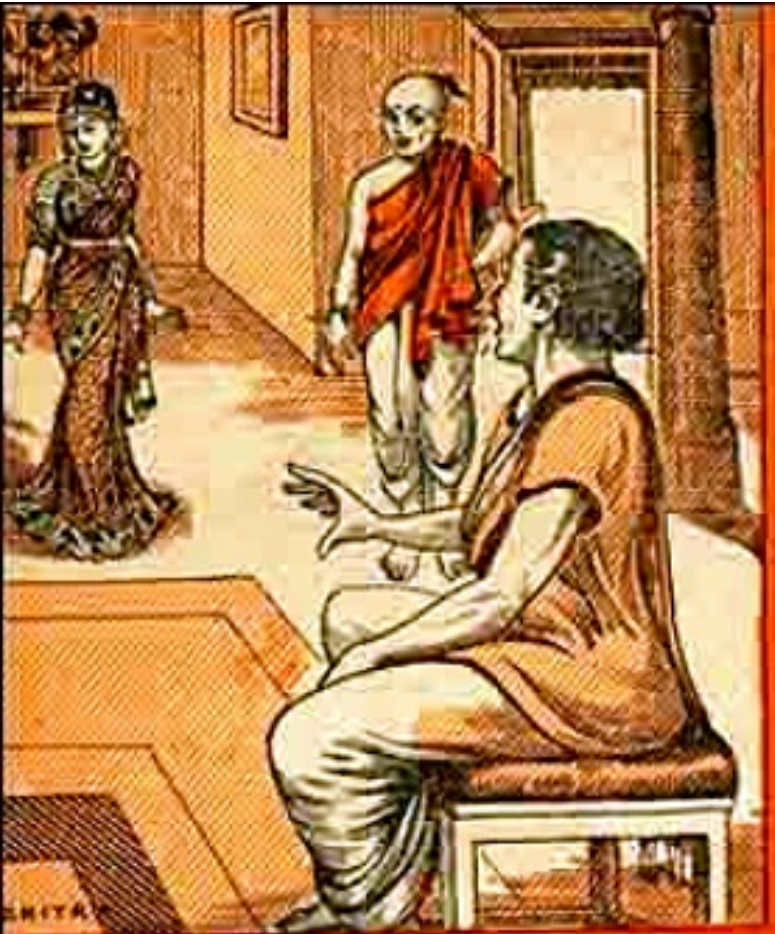
सोमभट्ट ने विवाह की तैयारियाँ शुरु कर दीं। वह बहुत धनी था। इसलिये उसने दूर दूर के बन्धुओं के पास निमन्त्रण पत्र भेजे। उनमें कई ऐसे भी थे, जिन्होंने कभी भी सोमभट्ट की लड़की को न देखा था। सब बन्धुओं को सोमभट्ट ने शीलवती को ही दिखाया। उसे देख वे बड़े सन्तुष्ट हुए। सोमभट्ट यह सोच रहा था कि शादी तक जैसे तैसे उसकी यह चाल चलती रहे और ऐन मुहूर्त पर वह अपनी लड़की को वेदिका पर ले आयेगा, और उसका विवाह हो जायेगा।

गाँव में बराती आ गये। सोमभट्ट ने अपनी लड़की को दुल्हिन बनाया और उसको एक बड़े टोकरे में रख, अन्धेरी कोठरी में रख दिया। गौरी पूजा के लिये शीलवती ही गई। उस समय, बराती उसको देखकर फूले न समाये। गौरी पूजा के समाप्त होते ही जब सोमभट्ट शीलवती को एक टोकरे में बिठाकर, उसको अन्धेरी कोठरी की ओर ले जाने लगा तब बरातियों का पुरोहित चिल्लाया—"जी! आप दुल्हिन को कहाँ ले जा रहे हैं! मुहुर्त का समय हो गया है।"

"हम लोगों के यहाँ यह रीति है कि शादी से पहिले दुल्हिन थोड़ी देर के

लिये मामा के पास भेजी जाती है।"— सोमभट्ट ने कहा।

"हम लोगों के यहाँ तो कोई ऐसी रीति नहीं है। जल्दी दुल्हिन को ले आइये।"—पुरोहित जल्दी करने लगा।

तब सोमभट्ट ने अपने साले को इशारा करके कहा—"लड़की को ले आओ।" वह कोठरी में गया। और जो टोकरा उसके हाथ लगा, उसी को ले आया और लाकर विवाह मंच पर रख दिया। वह वही टोकरा था, जिसमें शीलवती थी। जब मंगल सूत्र बाँध दिया गया और पान, आदि का अदला बदला हुआ। तब जाकर सोमभट्ट को पता लगा कि उसकी लड़की अब भी अंधेरी कोठरी में, टोकरे में बन्द थी।

सोमभट्ट को डर लगा। उसका अब भी यह ख्याल था कि शीलवती लड़की नहीं, लड़का है। पोल खुलने से पहिले उसको लड़के को लड़की बनाने का उपाय सोचना था। उसने घर के अन्दर जाकर अपनी पत्नी के कान में कुछ कहा। यकायक वह पागल की तरह चिल्लाने लगी, मानों घर की देवी क्रुद्ध हो उठी हो—"मुझे ही भूल गये हो! मेरी पूजा किये बौर

तुम अपनी लड़की की शादी करते हो! देखो, मैं तुम्हारी लड़की का क्या करता हूँ।"

जब घबराये हुए सब अन्दर भागे, तो वहाँ सबने सत्यवती को दुल्हिन के रूप में देखा। सोमभट्ट पछतावे का दिखावा करने लगा। "माई मुझे क्षमा करो! फिर मेरी लड़की को सुन्दर बना दो।" सोमभट्ट कहने लगा। परन्तु तबतक सोमभट्ट के पत्नी का 'पागलपन' ठीक हो गया था।

विद्याभास्कर चाल न समझ सका। उसने कहा—"ससुर जी! जब मेरा भाग्य ही खराब है, तब आप ही क्या कर सकते

हैं ! बदसूरत हो, या खूबसूरत, जब शादी की है तो शादी निभानी ही होगी।" उसने सोमभट्ट को आश्वासन दिया।

उसी समय, यज्ञदत्त भी अपनी पत्नी को लेकर वहाँ पहुँचा। सोमभट्ट और यज्ञदत्त बचपन के साथी थे। काशी में, दोनों ने एक ही गुरु के यहाँ शिक्षा पाई थी। सोमभट्ट ने यज्ञदत्त को सारा क़िस्सा सुनाया। यज्ञदत्त ने जब कृतवर्मा को बुलवाया तो उसने पहिचान लिया कि वह उसकी लड़की शीलवती ही थी।

यह कथा सुनाकर बेताल ने पूछा—"राजा! यज्ञदत्त क्या यह सोचे कि उसकी लड़की का विवाह हो गया है! या उसको उस विवाह का समर्थन करना चाहिये! अगर तुमने जान बूझकर इन प्रश्नों का उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा। सोच समझ लो।"

"सचमुच शीलवती ही विद्यभास्कर की पत्नी है। उसको देखकर ही उसने विवाह करना स्वीकार किया था। उसके गले में ही उसने मंगलसूत्र बाँधा था। यद्यपि वह बदसूरत हो गई थी, पर यह जानकर कि वह वही लड़की थी, वह उसके साथ रहने को मान गया था। शीलवती ने ज़रूरत से अधिक मदद देकर गले में मंगलसूत्र भी बँधवा दिया था। यानी, वह भी वह विवाह चाहती थी। और विवाह स्थिर करने के बाद जब यह मालूम हुआ कि कृतवर्मा सचमुच स्त्री थी, तब भी सोमभट्ट ने विवाह के बारे में कोई आपत्ति न की। इसका मतलब यह हुआ कि विवाह शीलवती का हुआ सत्यवती का नहीं।"—विक्रमार्क ने कहा।

इस प्रकार राजा का मौन-भंग होते ही, बेताल शव के साथ फिर पेड़ पर जा बैठा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९५६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. १०, जून के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जून - प्रतियोगिता - फल

जून के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनकी प्रेषिका को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो :
'चेहरे देखो खूब बनाए'

दूसरा फ़ोटो :
'आओ, इनसे हाथ मिलाएँ!'

प्रेषिका : श्री मुकुल मिश्रा, गांधी नगर, बस्ती (उ. प्र.)

रंग बताना

आँखें बंद करके किसी चीज़ का रंग बता देना अच्छा जादू है। मेरे पास कई धातु की छोटी छोटी डिस्कें हैं—ठीक हिन्दुस्तानी पैसे के आकार को। वे नीली, सफ़ेद और लाल हैं। पैसे की तरह उनके बीचों बीच छेद होता है। मैं लोगों से कहता हूँ कि वे पुराने चीनी सिक्के हैं। छेद होने के करण माला बनाकर उनको सुरक्षित रखा जा सकता है। वे गुम न होंगे।

मेरे पास इस समय ये चीनी सिक्के तीन रंग के हैं—लाल, सफ़ेद और नीले। तुम मेरी आँखें रूमाल से ज़ोर से बांध दो और मेरे हाथ में उनमें से एक सिक्का रखो। मैं उसका रंग बता दूँगा।

मैं अपने हाथ पीठ पीछे बांधकर खड़ा हो जाऊँगा और मेरा सहायक इनमें से एक सिक्का मेरे हाथ में रखेगा और मैं तुरत उसका रंग बता दूँगा। प्रेक्षकों को अचरज होगा। क्यों क सभी सिक्के एक आकार के हैं। सिर्फ़ रंग में ही भेद है। लोग सोचते होंगे कि मैं रंग कैसे मालूम कर लेता हूँ, जब कि मेरी आँखें बन्द हैं और हाथ पीठ पीछे रखे हुए हैं।

अब मैं दूसरा रहस्य बताता हूँ। आप यहाँ दिये हुए खाके को गौर से देखिये। सभी सिक्के एक ही जैसे हैं। उनकी मुटाई और परिधि भी वही है, परन्तु उनके बीच के छेद बराबर नहीं हैं। तीनों सिक्कों में सबसे छोटा छेद है नीले सिक्के का, उससे कुछ बड़ा है सफ़ेद का और लाल सिक्के का सबसे बड़ा है। जादूगर—पहले से ही पेन्सिल

जैसी नोकीली चीज़ अपने आस्तीन में रख लेता है और उससे वह सिक्कों के छेद आसानी से नाप लेता है। और तब वह बिना किसी दिक्कत के रंग बता सकता है। थोड़े अभ्यास से तरह नाप लेती है। जादू बहुत बढ़िया है।

आपको बस, इतना करना पड़ेगा कि किसी कारखाने से पीतल की छोटी छोटी डिब्बें मँगवाकर, और उनको
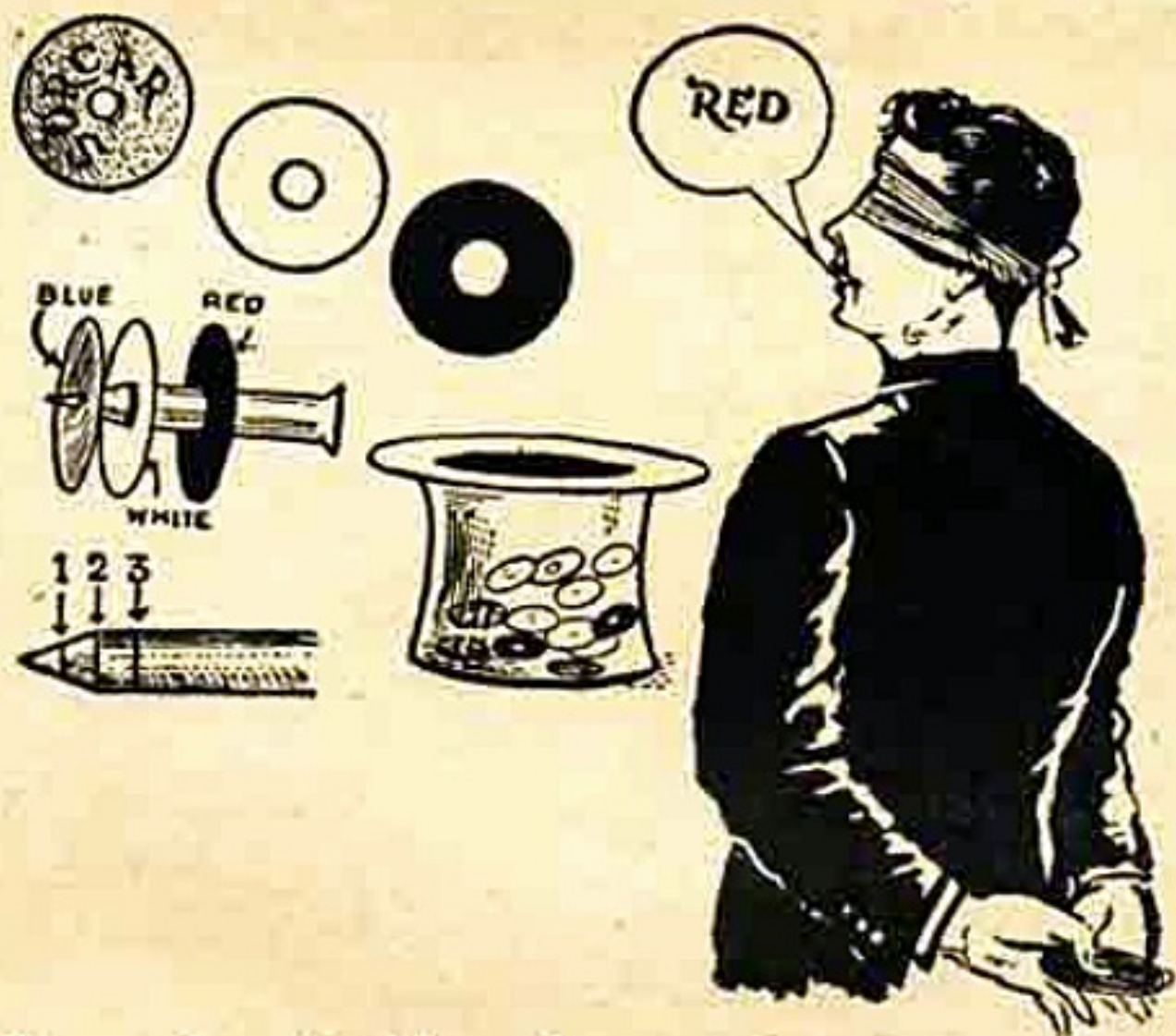
ही आप इसमें चतुर हो जायेंगे। स्केच में, छेद कुछ बड़े दिये गये हैं, ताकि जादू आसानी से समझा जा सके। वाक़ई, छेदों में बहुत ही कम भेद होता है, और वह नोकीली चीज़ उनको अच्छी लाल, नीला, सफ़ेद रंगना होगा और उनमें छेद करवा लीजिये।

प्रो. पी. सी. सरकार
मजीशियन
पो. बॉ. नं. ७८८८, कलकत्ता-१२.

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—५

बुढ़िया ने सोचा कि उसका लड़का बावला हो गया है। उसने कहा—"क्या कह रहे हो बेटा! जानते हो कल कैसी अजीब घटना हुई! हमारे मोहल्ले के दण्डनायकों को सिपाही पकड़ ले गये और सुना है कि उनको फाँसी भी हो गई है। मेरे लिये खलीफ़ा ने हज़ार दीनारें भेजी हैं। देखोगे!" यह सुन अबू का पागलपन दूर होना तो अलग और भी बढ़ गया।

"तू कहती है कि मैं खलीफ़ा न था। मैंने ही दण्डनायकों को फाँसी दिलवाई थी। मैंने ही तेरे पास हज़ार दीनारें भिजवाई थीं।" अबू अपनी माँ को पीटता जाता था।

उसकी माँ मार न सह सकी। वह चिल्लाने लगी—"आओ, भाई, बचाओ। मेरा लड़का पागल हो गया है।" चार पाँच आदमियों ने अबू को पकड़कर उसके हाथ से डंडा छीन लिया।

"मुझे छोड़ दो। जानते हो, मैं कौन हूँ! तुम्हारी जान निकलवा सकता हूँ।"—अबू गला फाड़कर चिल्लाने लगा।

सब को विश्वास हो गया कि अबू सचमुच पागल हो गया था। उसे वे जबरदस्ती पकड़कर पागलखाने में ले गये। वहाँ उसकी दिन-रात कोड़े से मरम्मत की गयी। इस तरह दस दिन तक इलाज होता रहा, तब जाकर अबू ठीक हुआ।

"जरूर मैं अबू अल हसन ही रहा होऊँगा। नहीं तो ये सब लोग मुझे पागल क्यों कहेंगे! मुझे खलीफ़ा क्यों नहीं कहते!"—वह सोचने लगा।

उसकी माँ उसकी हालत पर बहुत दुःखी थी। एक दिन वह उसको पागलखने में देखने गई। अबू ने अपनी माँ को देखते ही कहा "माँ— ऐसा लगता था, जैसे मुझपर कोई भूत सवार हो गया हो...."

तब माँ जान गई कि उसके लड़के का पागलपन दूर हो गया है। उसने पागलखाने के कर्मचारी से अपने लड़के को छोड़ने के लिए कहा।

अबू माँ के साथ घर गया। जब तक उसके घाव न भर गये, वह घर से न निकला। जब वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया तो फिर वह यथापूर्व पुल पर जा बैठता और अतिथियों को बुला लाता।

एक दिन उसको एक पुराना बूढ़ा व्यापारी शहर में जाता हुआ दिखाई दिया। एक मनुष्य को दो बार आतिथ्य न देने का उसका नियम था। फिर उसी बूढ़े व्यापारी के कारण की उसकी यह नौबत आई थी। इसलिये उसने अपना सिर फेर लिया।

परन्तु, बूढ़े व्यापारी का वेष धरे खलीफ़ा ने अपने भेदियों द्वारा उसके बारे में सब कुछ मालूम कर लिया था। वह यह भी चाहता था कि उसका कुछ आदर-सत्कार करे। क्योंकि उसके कारण ही उसकी मार-पिटाई हुई थी। इसलिये उसने अबू के पास जाकर कहा—"क्यों, अबू हसन साहब! खैरियत तो है!"

"मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं! आप जाइये।"—अबू ने कहा।

"मैं बड़ी आस लगाये आया था कि फिर आपके घर में आतिथ्य मिलेगा।"—खलीफ़ा ने कहा।

"आपने पिछली बार जो मेहरबानी की थी, क्या वह काफ़ी नहीं है! आप अपने रास्ते जाइये।"—अबू ने कहा।

समाचार वगैरह

उत्तर प्रदेश की सरकार ने महिलाओं के सांस्कृतिक तथा सामाजिक उत्थान एवं विकास के लिए 'महिला मंगल योजना विभाग' की स्थापना की है। इस विभाग की देखरेख में इधर बादशाहपुर में एक शिक्षण शिविर चलाया गया, जिसमें महिलाओं को स्वास्थ्य, सफ़ाई, हस्तकला, गृह उद्योग, सांस्कृतिक कार्य आदि सिखाये गये।

* * *

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्य समिति की एक बैठक में यह निश्चय किया गया कि विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के अध्ययन के लिए एक 'बदरीनाथ सर्व भाषा महा विद्यालय' स्थापित किया जाय। इस महा विद्यालय में दक्षिण की तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम और विदेशी भाषाओं में फ्रेन्च, जर्मन, जापानी तथा नेपाली भाषाओं की शिक्षा दी जाने की आयोजना की जायगी।

* * *

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों की योजना के अन्तर्गत इलाहाबाद, फ़िरोज़ाबाद, बनारस, गोरखपुर, कानपुर और बस्ती में छः क्षयरोग अस्पताल खोले जायेंगे।
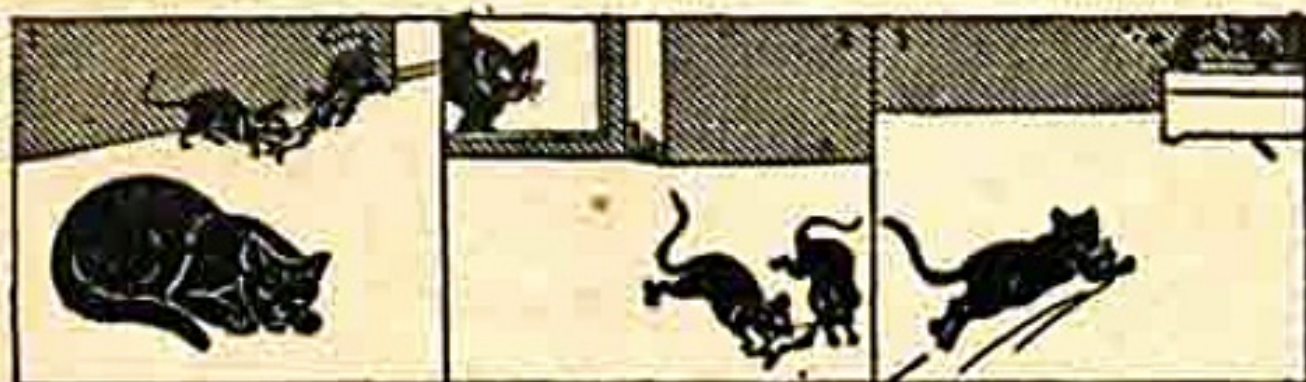
भारत सरकार की सलाह से उत्तर प्रदेश सरकार ने २४ मई से बनारस का नाम बदलकर 'वारणासी' कर देने का निश्चय किया है। वारणासी काशी से भी प्राचीन नाम है। इसकी चर्चा पुराणों और बौद्ध ग्रन्थों में पायी जाती है।

* * *

भूटान मक्खनों का देश है। यहाँ पर टैक्स के रूप में द्रव्य के बजाय मक्खन दिया जाता है; जिसे अर्थ शास्त्र की शब्दावली में 'अदला-बदली प्रणाली' कहा जाता है। धार्मिक कार्यों में भी मक्खन ही अधिक मात्रा में प्रयुक्त होता है। यहाँ बहुत थोड़ी संख्या में स्कूल हैं, जिनमें हिन्दी अनिवार्य बना दी गयी है।

बताया जाता है कि संसार के बड़े शक्ति स्रोतों के प्रदर्शनार्थ 'यूनेस्को' ने एक वैज्ञानिक चल प्रदर्शनी का आयोजन किया है, जो हाल ही में तीन सप्ताह के लिए पेरिस में शुरू की गई। इसके पश्चात यह प्रदर्शनी नई दिल्ली, कोलम्बो, बैंकाक, जकार्ता, हांकांग और टोकियो भी जायगी। यह प्रदर्शनी भ्रमण में लगभग तीन साल तक रहेगी।

* * *

इधर, प्राच्य वस्तुओं के मास्को संग्रहालय ने भारतीय संस्कृति एवं कला विभाग की बृहत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया है जिसमें तीन सौ से ऊपर नयी वस्तुएँ प्रदर्शित हैं, जो भारत के विभिन्न भागों के हस्त शिल्पकारों से एकत्रित की गयी हैं।

चित्र-कथा

दास और वास एक दिन बाज़ार की तरफ़ निकल पड़े। साथ में 'टाइगर' भी था। कुछ दूर जाने पर उन्हें एक मिठाई की दूकान दिखाई दी। दोनों के मुँह में पानी भर आये; पर पास में एक कानी कौड़ी भी नहीं थी। ठीक उसी समय एक लड़का उस दूकान के पास आया और चोरी से एक मिठाई की पुड़िया लेकर भागने लगा। टाइगर ने उसका पीछाकर उसे पकड़ लिया। इस पर दूकानदार बहुत खुश हुआ और मिठाई की पुड़िया उसी को भेंट में दी। दास और वास ने भी टाइगर को मना-मनूकर थोड़ी सी मिठाई खा ली।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press (Private) Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by T. S. Satyan

पुरस्कृत

'आओ! इनसे हाथ मिलाएँ!!'

प्रेषिका :

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1956 Regd. No. M. 5452